नरभक्षियों के बीच

शकुन बाल पॉकेट बुक्स

नरभक्षियों के बीच

सन्तराम वत्स्य

© शकुन प्रकाशन, दिल्ली

मूल्य : एक रुपया

●

शकुन बाल पॉकेट बुक्स
३६२५, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
द्वारा प्रकाशित

●

मुद्रक : भारती प्रिंटर्स, दिल्ली-३२

NARBHAKSHION KE BEECH : Santram Vatsya
SHAKUN BAL POCKET BOOKS, DELHI-6

विलायत के यार्क नगर में राबिन्सन क्रूसो नाम का एक लड़का रहता था. वह सोचता था कि मैं बड़ा होकर जहाज का नाविक बनूंगा और इस तरह दुनिया भर की सैर करूंगा.

किन्तु उसके पिता को पुत्र की यह बात पसन्द नहीं थी. वह उसे वकील बनाना चाहता था. जब कभी राबिन्सन समुद्र-यात्रा की बात करता तो पिता समुद्र-यात्रा की कठिनाइयां बताकर बेटे के मन में डर पैदा करने का प्रयत्न करता. समझाने पर राबिन्सन पिता की बात मान लेता पर कुछ दिनों बाद फिर समुद्र-यात्रा की बातें सोचने लगता. वह अपनी मां से मन की बात बताता और उसे कहता कि वह पिताजी से नाविक का काम करने की अनुमति ले दे पर मां भी बेटे को अपनी आंखों से दूर और खतरों से भरी नाविक की जिन्दगी नहीं अपनाने देना चाहती थी, वह भी उसे डांट देती.

राबिन्सन ने अभी तक न तो समुद्र देखा था और न ही उसे समुद्र-यात्रा के बारे में कुछ अता-पता था. बस, उसके मन में एक ललक थी, दुनिया देखने की और घाट-घाट का पानी पीने की. अठारह-उन्नीस वर्ष की कच्ची उम्र ऐसी ही होती है. जोश इतना होता है कि कोई भी काम कठिन नहीं लगता और जोश के साथ होश कम रहता है.

राबिन्सन का एक मित्र जहाज से लन्दन जा रहा था. उसे विदा करने के लिए राबिन्सन को बन्दरगाह जाने का अवसर मिल गया. जब उसका मित्र जहाज पर बैठ गया तो बहुत दिनों से दबी पड़ी समुद्री-यात्रा करने की उसकी इच्छा ने जोर मारा और वह भी अपने मित्र के साथ जहाज में जा बैठा.

माता-पिता को कोई सूचना दिये बिना ही वह इस यात्रा पर निकल पड़ा. वह बड़ा प्रसन्न था. आज उसके मन की साध पूरी हुई थी. जहाज धीरे-धीरे समुद्र में बढ़ने लगा. जहां तक नजर जाती थी पानी ही पानी दिखायी देता था. जब जहाज गहरे समुद्र में

पहुंचा तो आंधी चलने लगी और उछलती लहरों पर जहाज हिचकोले खाने लगा. अब तो राबिन्सन बड़ा घबराया. जहाज के हिचकोले खाने से उसे मितली आने लगी. कै कर-करके उसका बुरा हाल हो गया. उसे लगा कि कै के मारे कलेजा बाहर निकल जाएगा. वह सोचने लगा, 'हे भगवान! एक बार किसी तरह समुद्र तट पर पहुंच जाऊं तो दोबारा समुद्र-यात्रा का कभी नाम भी नहीं लूंगा. बाप रे! मुझे क्या पता था कि समुद्र-यात्रा ऐसी प्राण लेवा होती है. पिता सच कहते थे. अम्मा ठीक कहती थीं. उनकी बात मानता तो आज इस तरह पछताना न पड़ता!'

कुछ समय बाद तूफान थम गया और जहाज ने हिचकोले खाना बन्द कर दिए, तो उसकी तबीयत ठीक हो गयी और समुद्र-यात्रा उसे अच्छी लगने लगी. अब वह फिर प्रसन्न था.

यह जहाज चलते-चलते यारमाउथ नामक बन्दरगाह में पहुंचा. अनुकूल हवा की प्रतीक्षा में

जहाज को यहां रुकना पड़ा. एक दिन बड़े ज़ोर का तूफ़ान आया. ऊंची लहरों की मार से जहाज डगमगाने लगा. जहाज के कप्तान ने भांप लिया कि जहाज को खतरा है. उसने बन्दूकें चलाकर तट के लोगों को संकेत दिया कि यह जहाज खतरे में है और तुरन्त सहायता पहुंचाई जाए. शीघ्र ही एक नाव जहाज के पास सहायता के लिए आयी. जहाज पर सवार सभी लोग नाव पर आ बैठे और किनारे आ लगे. थोड़ी ही देर में जहाज समुद्र में डूब गया.

सिर मुंड़ाते ओले पड़े. राबिन्सन की पहली ही यात्रा में रुकावट पड़ गयी. राबिन्सन की जेब में मार्ग में खर्च के लिए कुछ रुपये थे. वह सड़क के रास्ते लन्दन जा पहुंचा. पहले तो उसने घर लौटने की ही बात सोची थी, पर माता-पिता की डांट-डपट और मित्रों द्वारा हंसी उड़ाए जाने के डर से उसने अपना निश्चय बदल दिया.

लन्दन जाकर राबिन्सन ने एक जहाज के कप्तान से दोस्ती गांठ ली. यह कप्तान कुछ दिन पहले ही

अफ्रीका की यात्रा करके लौटा था और इस यात्रा में उसने अच्छे पैसे कमाए थे. कप्तान ने राबिन्सन से वायदा किया कि वह उसे अपने साथ अफ्रीका की यात्रा पर ले चलेगा.

राबिन्सन ने अफ्रीका के आदिवासी लोगों में बेचने के लिए कांच के रंग-बिरंगे मनकों की मालाएं और दूसरी सस्ती चीजें खरीदकर अपने साथ रख लीं. उसे यह सलाह कप्तान ने ही दी थी. एक दिन जहाज यात्रा पर चल पड़ा. सारी यात्रा बिना किसी संकट के पूरी हो गयी. अफ्रीका पहुंचकर राबिन्सन ने वहां के लोगों को अपना माल बेचकर बदले में सोना ले लिया. अफ्रीका में सोने की बहुत खानें थीं और आदिवासी सोने से चीजों को बदलते थे. इस यात्रा में राबिन्सन ने कुछ धन कमा लिया.

धन कमाने के लालच में राबिन्सन ने दूसरी बार फिर अफ्रीका की यात्रा की. पर इस बार की यात्रा में उसे बड़ी विपत्ति का सामना करना पड़ा. उसका जहाज तट से अभी काफी दूर था कि

एक दूसरा जहाज बड़ी तेजी से इस जहाज की ओर आता दिखाई दिया. अनुभवी कप्तान को पता लगा कि दूसरा जहाज समुद्री डाकुओं का है. डाकुओं ने राबिन्सन वाले जहाज पर हमला बोल दिया और जहाज को लूट लिया. कुछ लोग मारे गए और जो बचे उन्हें डाकुओं ने अपना दास बना लिया. राबिन्सन जीता बच गया था. वह भी दास बना लिया गया. समुद्री डाकुओं के सरदार ने राबिन्सन को अपने पास ही रखा. राबिन्सन उसके घर माली का काम करता था. इन डाकुओं का जहाज जब कभी वहां की बन्दरगाह में आकर ठहरता तो राबिन्सन को जहाज की सफाई का काम भी करना पड़ता. सरदार की सेवा करते राबिन्सन को दो वर्ष हो गए पर छुटकारे की कोई सूरत दिखाई नहीं देती थी. राबिन्सन बड़ा उदास रहता. वह चुपचाप अपने विपत्ति के दिन काट रहा था और ऐसे अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था, जब वह वहां से भाग निकले.

धीरे-धीरे डाकुओं के सरदार को विश्वास हो गया कि अब राबिन्सन भागेगा नहीं. कभी-कभी वह उसे अपने साथ मछलियां पकड़ने के लिए समुद्र में ले जाने लगा. जूरी नाम का अफ्रीकी दास भी मछली पकड़ने सरदार के साथ जाता था.

एक दिन की बात है, डाकुओं के सरदार ने राबिन्सन को आज्ञा दी कि मछली पकड़ने के काम में आने वाली नाव में सारा सामान रखो और मछलियां पकड़ने जाने के लिए तैयार हो जाओ. जूरी को भी साथ चलने को कहा. आज सरदार के साथ उसके कई मित्र भी मछलियां पकड़ने जाने वाले थे. खाने-पीने की अच्छी-अच्छी चीजें, बन्दूकें और गोला-बारूद तथा मछलियां पकड़ने का सामान ठीक से नाव पर रख दिया गया. बहुत देर तक प्रतीक्षा करने पर भी जब सरदार के मित्र नहीं आए तो सरदार ने एक और नौकर को जूरी और राबिन्सन के साथ भेज दिया और मछलियां पकड़कर लाने को कहा.

राबिन्सन ने सोचा कि आज भागने के लिए अच्छा अवसर है. उसने नौकर से कहा, "हम तीनों के खाने-पीने की कुछ चीजें और रख लो. पहले जो बढ़िया-बढ़िया चीजें रखी हुई है ये तो सरदार और उनके मित्रों के लिए हैं. उन्हें हम दास कैसे खा सकते हैं ?"

तट से कोई मील भर समुद्र में जाकर उन्होंने मछलियां मारना प्रारम्भ किया. पर यहां मछलियां मिल नहीं रही थीं इसलिए राबिन्सन ने सुझाव दिया कि कुछ और आगे, गहरे समुद्र में नाव ले जानी चाहिए. वे नाव को किनारे से बहुत दूर ले गए और मछलियां मारने लगे.

राबिन्सन ने अवसर पाकर नौकर को जोर का धक्का दे समुद्र में गिरा दिया. अब उसने जूरी के साथ मिलकर नाव को आगे बढ़ाना प्रारम्भ किया. वे दोनों नाव को दक्खन की ओर ले गए.

नौकर तैरना जानता था. वह किनारे की ओर

लौट आया और सरदार को सारी बात बता दी.

रॉबिन्सन और शूरी नाव को पूरे ज़ोर से खेते जा रहे थे. यद्यपि उन्हें कुछ पता नहीं था कि वे कहां जा रहे हैं पर वे दोनों फिर भी प्रसन्न थे. यह दासता से छुटकारा पाने की, स्वतन्त्र होने की प्रसन्नता थी. खाने-पीने का सामान नाव में था ही. नाव चलती चली गयी और इसी तरह कई दिन बीत गए. वे रात को भी अपनी नाव तट पर नहीं ले जाते थे. उन्हें डर था कि इन अनजाने प्रदेशों में पता नहीं कैसे हिंस्र जीव-जन्तु रहते हों जो तट पर उन पर आक्रमण कर दें. तट प्रदेश में रहने वाले मनुष्यभक्षी और लुटेरे आदिवासियों का भय भी कम न था.

इसी तरह नाव में रहते उन्हें कई सप्ताह बीत गए. एक दिन उनके पास से एक पुर्तगाली जहाज गुज़रा. इन दोनों ने जहाज के कप्तान से मदद मांगी. उसने इन्हें अपने जहाज पर चढ़ा लिया और उनकी बन्दूकें तथा दूसरा सामान खरीद लिया. क्योंकि

राबिन्सन और जूरी पुर्तगालियों की भाषा नहीं समझते थे, इसलिए वे आपस में खुलकर बातचीत नहीं कर सकते थे. जहाज वालों ने गोरी चमड़ीवाले राबिन्सन से अच्छा व्यवहार किया. राबिन्सन ने काले अफ्रीकी जूरी को पुर्तगालियों को बेच दिया.

यह जहाज ब्राजील जा रहा था. वहां पहुंचकर राबिन्सन ने कुछ काम-धन्धा करने का विचार किया. रुपये उसके पास काफी थे. उसने खेती योग्य जमीन का एक टुकड़ा खरीद लिया और उसमें गन्ने और तम्बाकू की खेती करने लगा. उसके दिन यहां मजे में कटने लगे पर जब कभी उसे अपने घर और माता-पिता की याद आती, वह उदास हो जाता. पर यहां से उसका देश बहुत दूर था. वह चार साल यहां रहा और खूब मालदार बन गया. अब फिर उसको कहीं दूसरी जगह जाने की इच्छा हुई. वह स्वभाव से ही घुमक्कड़ था और एक जगह टिककर बैठना उसे पसन्द नहीं था.

उसके पड़ोसी जानते थे कि राबिन्सन को

समुद्री-यात्रा का अच्छा अनुभव है और यह कई बार अफ्रीका की यात्रा कर चुका है. उन्होंने उससे कहा, "प्यारे राबिन्सन! तुम्हें समुद्री-यात्रा का खूब अनुभव है. तुम जहाज लेकर गायना प्रदेश में जाओ और हमारे लिए कुछ अफ्रीकी दास पकड़कर ले आओ."

यह सुझाव राबिन्सन को पसन्द आया. पड़ोसियों ने उसके लिए एक जहाज और दूसरी चीजों का पूरा प्रबन्ध कर दिया. राबिन्सन ने अपने खेत पर काम करने के लिए कुछ दास लेना तय कर लिया. इसके अतिरिक्त अपने वेतन के रूप में भी उसने अच्छी राशि तय कर ली.

जहाज दस-बारह दिन तो ठीक दिशा में चलता रहा किन्तु बाद में भारी तूफान के कारण ठीक मार्ग से भटककर गलत दिशा में बहुत दूर निकल गया. तूफान अब भी जोरों पर था और थमने का नाम नहीं ले रहा था. एक दिन जहाज के दो कर्मचारी लहरों की चपेट में आ गए और समुद्र में बह गए.

इस जहाज में काम करने वालों में बड़ी घबराहट फैल गयी. एक बार थमकर फिर जोर का तूफान आया और जहाज थरथराने लगा. तूफानी लहरों के थपेड़ों से ऐसा लगता कि जहाज अब डूबा. सारी रात भगवान् का नाम जपते कटी. सुबह होने पर थोड़ी ही दूरी पर धरती दिखाई देने लगी तो बड़ी कठिनाई से जहाज को उस ओर मोड़ा ताकि उसे किनारे पर ले जाकर लंगर डाल दिया जाए और लोगों की जान बचे. पर अब भी मुसीबत ने पीछा नहीं छोड़ा. थोड़ा-सा तट की ओर चलने पर जहाज का पेंदा बालू में धंस गया. इससे जहाज का बड़े जोर का धक्का लगा और मस्तूल टूट गए, पालें फट गयीं. जहाज का जोड़-जोड़ इस धक्के से हिल गया. लहरों का पानी जहाज में घुस गया. बेचारा कप्तान नाविकों को चीख-चीखकर कुछ कह रहा था पर तूफान के शोर में किसी को कुछ सुनाई नहीं देता था. चारों ओर भगदड़ मची हुई थी. अपनी जान बचाने के फिक्र में सभी इधर-उधर भागने का निष्फल प्रयत्न

कर रहे थे. जहाज पर रखी नावें टूटकर बेकार हो चुकी थीं. केवल एक नाव कुछ-कुछ काम लायक थी. सभी लोग उस नाव में जा बैठे और किनारे की ओर बढ़ चले. पर यहां भी दुर्भाग्य ने उनका पीछा नहीं छोड़ा.एक जोर की लहर आई और नाव का उलट गयी. वैसे तो जहाज पर काम करनेवाले सभी लोग तैरना जानते थे पर ऐसे तूफान में जब जहाज भी डूब रहे थे, कोई क्या तैरता. राबिन्सन हाथ पैर पटकता रहा और एक लहर ने उसे किनारे की रेत पर ले जाकर पटक दिया. पर तूफान अभी थमा थोड़े ही था. एक बड़ी लहर फुफकारती चली आ रही थी. वह उठकर भागने लगा और तट से इतनी दूर चला गया, जहां तक लहर की पहुंच नहीं थी. यदि वह ऐसा न करता तो लहर का पानी लौटते समय उसे भी अपने साथ बहा ले जाता. जहाज और साथियों को खोकर भी राबिन्सन के भाग्य ने उसे मरने से बचा लिया था.

राबिन्सन काफी देर वहां पड़ा रहा. फिर उठकर इधर-उधर घूमकर देखने लगा कि यह कैसी जगह है और कुछ खाने को मिल सकता है या नहीं. दिन ढल रहा था और रात को सोने के लिए सुरक्षित जगह भी खोजनी थी. यह घना जंगली इलाका था और रात में जंगली जानवरों के हमले का डर था.

वह भूखा और थका हुआ था. कपड़े उसके भीगे हुए थे. चलने की हिम्मत नहीं थी पर—मरता क्या न करता. उसका हाथ यों ही उसकी जेब पर जा पड़ा तो उसे पता चला कि उसका चाकू जेब में सुरक्षित है. उसने पास के एक वृक्ष से एक सीधी टहनी काटकर अपने लिए एक लाठी तैयार की.

सूर्य छिप चुका था. यह डरावना जंगल अंधेरे में और भी डरावना हो चला था. राबिन्सन एक पेड़ पर चढ़ गया और तने से फूटनेवाली दो-तीन बड़ी टहनियों के बीच जा बैठा. थोड़ी देर में उसे गहरी नींद आ गई और वह सवेरे ही जागा.

सूरज निकल चुका था. चारों ओर धूप फैली

हुई थी. उसने समुद्र की ओर देखा—तूफान थम चुका था. उसका जहाज किनारे से बहुत दूर नहीं था.

रॉबिन्सन ने अपने कपड़े उतारे और तैरकर जहाज के पास तक जा पहुंचा पर जहाज के ऊपर चढ़ना कठिन था. बालू में फंसने के कारण जहाज पानी के ऊपर काफी ऊंचा निकल आया था. उसने जहाज के चारों ओर घूमकर देखा तो पतवार से लटकती एक रस्सी दिखाई दी. वह उसी को पकड़कर ऊपर जा चढ़ा. जहाज पर एक भी नाविक नहीं था. जहाज में रखा सारा सामान बन्द कमरों में सुरक्षित था. बिस्कुट का एक पीपा भी उसे मिल गया. फिर तो उसने सारा काम छोड़कर पहले पेट-पूजा करने की सोची. खा पीकर उसकी जान में जान आयी.

अब उसके सामने जहाज के सामान को निकालकर ले जाने की समस्या थी. सबसे पहले उसने बड़े-बड़े लकड़ी के तख्ते निकाले और रस्सी से बांधकर उनका एक सपाट-सा बेड़ा तैयार कर लिया. फिर

उसने नाविकों के सामान रखने के सन्दूकों के ताले तोड़े और उन्हें खाली करके उनमें खाने-पीने की चीजें भर लीं. इन सन्दूकों को उसने बेड़े पर बांध दिया. खोजते-ढूंढते उसे औजारों का सन्दूक भी मिल गया. उसे भी तख्ते पर कसकर बांध लिया. फिर उसने कुछ कपड़े, बन्दूकें, पिस्तौल, गोली-बारूद और दो तलवारें भी बेड़े पर रख लीं. फिर मजबूत रस्सों के सहारे उसने तख्तों के उस बेड़े को जहाज से पानी में उतारा. अब इस बेड़े को किसी तरह किनारे तक ले जाने का काम बाकी था. इस समय समुद्र में ज्वार आया हुआ था, इसलिए इस काम में कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई.

अब रॉबिन्सन एक ऊंचे टीले पर चढ़कर यह देखने लगा कि वह कैसी जगह है और आस-पास कोई रहता है या नहीं. उसने देखा कि यह एक छोटा-सा टापू है. यहां किसी मनुष्य के रहने का कोई भी चिह्न उसे दिखाई नहीं दिया. अब वह फिर अपने सामान को संभालने के काम में लग पड़ा. उसने तख्तों

और लट्ठों को जोड़कर एक छोटी झोंपड़ी बना ली. रात को वह उसी झोंपड़ी में सोया रहा.

अब वह प्रायः प्रतिदिन जहाज पर आता और सामान को बेड़े पर लादकर ले आता और झोंपड़ी में जमा कर देता. उसने फटे हुए पालों के टुकड़ों को जोड़कर एक तम्बू बना लिया और झोंपड़ी के पास ही गाड़ दिया. फिर चारों ओर पत्थरों को चिनकर छोटी दीवार बना दी जिससे जंगली जानवर भीतर न आएं.

इसी तरह पन्द्रह-बीस दिन बीत गए. उसकी झोंपड़ी के पास होकर जो नदी समुद्र में गिरती थी, उसका पानी समुद्र में ज्वार आने से खारा हो जाता था. इसलिए किसी दूसरी अच्छी जगह झोंपड़ी बनाने का उसने निश्चय किया. थोड़ा-सा खोजने पर एक चट्टानी टीले के पास उसे समतल स्थान मिल गया. इस चट्टान में एक गुफा भी थी जो राबिन्सन के लिए बड़े काम की चीज थी. इस गुफा से सटाकर उसने अपना तम्बू गाड़ा. तम्बू से होकर

वह गुफा में घुस सकता था. तम्बू के बाहर उसने पास-पास सटे हुए खूंटे गाड़कर बाड़ बना दी और उसमें कोई फाटक नहीं रखा. वह एक सीढ़ी द्वारा गुफा के भीतर और बाहर आता-जाता. गुफा में पहुंचकर वह सीढ़ी को ऊपर खींच लेता ताकि कोई भी दूसरा सीढ़ी द्वारा गुफा तक न पहुंच सके.

उसके पास समय बहुत था पर काम कुछ नहीं. अतः उसने चट्टान को काटकर गुफा को चौड़ा बनाना प्रारंभ किया. इस सुरक्षित स्थान में वह बारूद को रखना चाहता था जिससे पानी और आग से वह सुरक्षित रहे.

राबिन्सन जहाज से दो बिल्लियां और एक कुत्ता भी अपने साथ ले आया था. ये तीनों जानवर उसके अच्छे साथी बन गए थे.

उसके पास कागज, कलम और स्याही सभी कुछ था. उसने निश्चय किया कि डायरी लिखूंगा. सबसे पहले उसने एक बड़े से लट्ठे पर अपने इस

टापू में पहुंचने की तिथि ३० सितम्बर,१६५९ चाकू से कुरेदकर लिखी. इसके बाद वह प्रतिदिन एक लकीर का निशान बना देता और रविवार की लकीर को कुछ बड़ा बनाता.

खाने-पीने की चीजें उसके पास खूब थीं. इसके अतिरिक्त वह कबूतरों और जंगली बकरों को मार-कर खा लेता. बेकार से बेगार भली, यही सोचकर उसने गुफा को छेनी से काटकर और भी खुला बनाने का निश्चय किया. गुफा से निकलने वाले मलबे को चिनकर उसने गुफा के मुंह पर बरामदा जैसा बना लिया. इतने दिनों में उसे यह भी निश्चय हो गया था कि इस टापू पर कोई भी हिंसक जानवर नहीं है. इसलिए गुफा में आर-पार छेद कर दिया. गुफा की दीवारों में खूंटियां गाड़कर बन्दूकें और तलवारें उसने वहां लटका दीं. गुफा के मुंह पर किवाड़ लगा लिए. फिर उसने अपने लिए एक कुर्सी और एक मेज भी बना ली. पर एक दिन गुफा की छत की ओर का बहुत-सा भाग गिर पड़ा. यद्यपि

रॉबिन्सन दबने से बच गया पर बहुत-सा सामान मलबे के नीचे दब गया. इस मलबे को बाहर फेंकने और छत को तख्तों से पाटने के लिए उसे कई दिन कड़ा परिश्रम करना पड़ा.

रॉबिन्सन अपने आपको काम में लगाए रखता था, फिर भी निर्जन द्वीप में अकेले रहना कम दुःखदायी नहीं था. वह बहुत उदास हो जाता और कई बार तो रो भी पड़ता. उसे आशा थी कि कभी कोई जहाज इधर होकर गुजरेगा और वह उसमें बैठकर अपने घर पहुंच जाएगा. इसी उद्देश्य से वह पहाड़ी पर चढ़कर सागर में दूर-दूर तक दृष्टि दौड़ाता पर उसे कोई जहाज दिखाई नहीं देता और निराशा में उसका चेहरा मुर्झा जाता. वह सोचता, यदि मेरे पास एक नाव होती तो मैं यहां से अवश्य भाग निकलता.

उस निर्जन द्वीप में रहते रॉबिन्सन को कई महीने हो गए. अब वहां वर्षा ऋतु शुरू हो गई. कई-कई दिन

लगातार पानी बरसता रहता. इस टापू पर दो ही ऋतुएं होती थीं—गर्मी और बरसात. वर्षा ऋतु के प्रारंभ में राबिन्सन ने अनाज के खाली बोरे गुफा के बाहर झाड़ दिए थे. इन बोरे से झड़े हुए गेहूं और जौ के दानों में अंकुर फूट पड़े और उन्हें देखकर उसने जौ और गेहूं बो दिए. समय पाकर पौधे बढ़े हुए और इनमें बड़ी-बड़ी बालें लगीं. यों राबिन्सन ने इस टापू में खेती करना प्रारंभ कर दिया. जंगल के एक भाग को काटकर और खोदकर उसने अपना खेत तैयार कर लिया था. अनाज पीसने की राबिन्सन के पास कोई व्यवस्था नहीं थी. यहां जो पत्थर थे, वे कच्चे थे और उनसे कूटने-पीसने का काम नहीं हो सकता था. वह प्रायः अनाज को उबालकर खाता. अन्त में उसने लकड़ी का एक ऊखल और मूसल बनाया और उनसे अनाज को कूट-पीसकर रोटी के लिए आटा बनाने लगा.

एक दिन राबिन्सन गुफा में बैठा था कि बड़े ज़ोर का भूचाल आया. गुफा कांपने लगी और पत्थर

गिरने लगे. वह भागकर गुफा के बाहर पहुंचा तो वहां भी यही हाल था. पर खुले में ऊपर से कुछ गिर पड़ने का भय नहीं था. कुछ दूर पहाड़ी पर से एक चट्टान समुद्र की ओर लुढ़क रही थी. टापू की धरती जगह-जगह से फट गई और उसमें गहरी दरारें पड़ गईं. कई जगह दरारों से पानी फूट निकला. समुद्र में भी ऊंची-ऊंची लहरें उठने लगीं. भूकम्प के एक के बाद एक तीन झटके आए. भूकम्प के थमने के थोड़ी देर बाद ही बड़े ज़ोर की आंधी चलने लगी. पेड़ गिरने लगे. बिजली की गरज के साथ मूसलाधार पानी बरसने लगा. राबिन्सन इस तूफान से बचने के लिए फिर गुफा में चला गया.

इस भूकम्प से राबिन्सन के मन में भय बैठ गया. वह इस गुफा को छोड़ने की बात सोचने लगा. इस भूकम्प और तूफान ने उसके जहाज़ के कुछ टुकड़े किनारे तक लाकर फेंक दिए. ये तख्ते और इनमें लगा कील-कांटा सभी कुछ उसने संभालकर रख लिया.

एक दिन धरती पर रेंगता एक विशाल कछुआ राबिन्सन ने देखा. वह कछुआ उसने मार डाला. उसके पेट को चीरने पर कई अण्डे निकले. राबिन्सन को ये अण्डे बड़े स्वादिष्ट लगे. एक दिन उसने तोते का एक बच्चा पकड़ लिया और उसे पालने लगा. तोते को उसने बोलना सिखाया. अब तो वह तोता राबिन्सन क्रूसो का नाम लेकर पुकारने लगा. तोते के मुंह से अपना नाम सुनकर राबिन्सन बड़ा प्रसन्न हुआ.

कुछ दिन बाद, सवेरे राबिन्सन उठा तो उसे सारे शरीर में दर्द मालूम पड़ा. जाड़ा लगकर उसे जोर का बुखार आ गया. वह बिस्तर में पड़ा रहा. बुखार बहुत तेज था. बुखार के कारण उसे बेहोशी हो जाती और बुरे डरावने सपने आते. ये दिन उसने बड़ी बेचैनी से काटे. उसे कोई पानी का घूंट पिलाने वाला भी नहीं था. कुछ दिनों के बुखार से ही वह बहुत कमजोर हो गया. उसके लिए थोड़ी दूर तक चलना-फिरना भी कठिन हो गया.

धीरे-धीरे उसकी कमज़ोरी दूर हुई तो उसने इस सारे टापू को घूम-फिरकर देखने का निश्चय किया. घूमते-घूमते उसे बहुत-सी काम की चीज़ें मिलीं. इस टापू पर अंगूर और दूसरे कई तरह के फल होते थे. जंगली तम्बाकू और ईख भी यहां बहुत होता था. उसने बहुत-से अंगूर तोड़े और उन्हें सुखाकर दाख तैयार कर लिया. टापू के इस फलों वाले भाग में भी उसने एक झोंपड़ी बना ली. झोंपड़ी के चारों ओर उसने हरी टहनियां गाड़कर बाड़ लगा दी. बरसात के कारण इन हरी टहनियों ने जड़ पकड़ ली और हरे-भरे पेड़ों की पक्की बाड़ बन गई. इन पेड़ों के घेरे में बन्द झोंपड़ी बाहर से दिखाई तक नहीं देती थी. फिर उसी तरह की टहनियां उसने पुरानी झोंपड़ी के चारों ओर भी रोप दीं और वहां भी पेड़ों की ऊंची बाड़ बन गई. अब वह टापू के अनदेखे भागों में घूमता रहा. एक दिन जब एक ऊंचे टीले पर चढ़कर उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई तो कुछ दूर उसे धरती दिखाई दी. पर वह यह निश्चय नहीं

कर सका कि यह कोई छोटा टापू है या किसी बड़े देश का किनारा. टापू के दूसरे छोर पर उसने बहुत से कछुए देखे. यहां जंगली बकरियां और पंछी भी बहुत थे. यह स्थान उसके पहले वाले स्थान की अपेक्षा अधिक सुविधाजनक था.

अब रॉबिन्सन ने नई देखी हुई धरती पर जाने की ठानी, पर उसके पास नाव तो थी नहीं. जहाज के तख्तों को जोड़कर नाव बनाने का यत्न किया पर सफलता नहीं मिली. अब उसे ध्यान आया कि पेड़ के मोटे तने को खोखला करके भी नाव बनाई जा सकता है. उसने एक मोटे तने का पेड़ खोजा और उसे काटना शुरू किया. फिर उसमें से नाव के काम का हिस्सा अलग किया. अब वह उसे खोलकर नाव बनाने लगा. वह नाव बनाते समय सोचता कि एक दिन मैं इस नाव पर बैठकर इस निर्जन द्वीप से निकल पड़ूंगा और किसी न किसी तरह अपने घर माता-पिता के पास जा पहुंचूंगा. कड़ा परिश्रम करके उसने नाव तैयार कर ली. इस नाव में कोई

बीस आदमी बैठ सकते थे. अब इस नाव को पानी तक पहुंचाने की समस्या थी. नाव बड़ी भारी थी और रॉबिन्सन अकेला उसे पानी तक नहीं ले जा सकता था. प्रयत्न करने पर भी वह नाव को अपनी जगह से हिला नहीं सका. अन्त में उसने समुद्र से नाव तक एक नहर खोदने का निश्चय किया ताकि नाव को उसमें डालकर समुद्र तक पहुंचा सके. पर अकेले आदमी को नहर खोदने में बरसों लग जाते. इसलिए उसने नाव को वहीं पड़े रहने दिया. उसे इतने दिनों के परिश्रम के व्यर्थ जाने का बहुत दुःख था. वहां से निकलने की उसकी आशा फिर निराशा में बदल गई.

रॉबिन्सन को इस निर्जन टापू में रहते चार वर्ष बीत गए. उसके कपड़े फट-फटाकर चीथड़े हो गए थे. इस टापू में धूप बड़ी तेज पड़ती थी और नंगे शरीर रहना बहुत कठिन था. रॉबिन्सन के पास बकरों, खरगोशों और कुछ दूसरे छोटे जानवरों की खालें

तो थीं पर उन्हें यहां गर्मी की ऋतु में पहनना बहुत कठिन था. पर और कोई उपाय था भी नहीं. गर्मी में न सही, बरसात में तो ये कपड़े पहने जा सकते थे. उसने खाल का एक टोप, चोगा और एक पाजामा तैयार किया. खाल का बालों वाला भाग उसने बाहर की ओर किया. जब वह खाल के इन कपड़ों को पहनता तो किसी दोपाए जानवर जैसा ही लगता. उसने खाल की एक छतरी भी बनाई जो सदा तनी रहती थी. बरसात और धूप में आवश्यकता के अनुसार वह इन चीजों का उपयोग करता.

वह समय पर अनाज बोता, काटता और संभालकर रख लेता. वह अंगूरों को सुखाकर रख लेता और साल भर खाता. इसी तरह रहते उसे पांच साल और बीत गए.

अब उसके मन में फिर एक नाव बनाने का विचार आया. कठिन परिश्रम करके कोई साल भर में उसने एक छोटी नाव तैयार कर ली पर वह बहुत छोटी थी. समुद्र में इस नाव पर सवार होकर कोई

लम्बी यात्रा करना खतरे से खाली नहीं था. इस नाव पर बैठकर वह थोड़ी दूर तक समुद्र में जाता और मछलियां पकड़ता. नाव में बैठा वह अपने सिर पर छाता लगा लेता और मजे में मछलियां मारता रहता.

अब उसके मन में विचार आया कि नाव में बैठकर कम से कम इस टापू का चक्कर तो लगा ही लिया जाए. उसने नाव में खाने-पीने का सामान और एक बन्दूक रखकर टापू का चक्कर लगाना प्रारम्भ कर दिया. टापू के पूर्वी तट की यात्रा करने के बाद रेतीला तट आ गया. यहां वह रुक गया. नाव को किनारे लगाकर वह एक ऊंचे टीले पर चढ़कर देखने लगा तो कुछ दूर उसे एक छोटी नदी दिखाई दी जो पास ही समुद्र में आ मिलती थी. उसने उस नदी में नाव ले जाने का निश्चय किया. पर उसको वायु अनुकूल नहीं थी इसलिए दो दिन वहीं रुका रहा. तीसरे दिन जब वायु अनुकूल दिशा में बहने लगी तो उसने नाव उस ओर बढ़ा दी. कुछ

आगे बढ़ने पर गहरा पानी आ गया. यहां तेज प्रवाह में पड़कर नाव किनारे से दूर जाने लगी. वह नाव को किनारे के पास-पास रखने में असफल रहा और नाव किनारे से दूर, बहुत दूर समुद्र में पहुंच गई. अब तो उसे अपना टापू भी दीखना बन्द हो गया था. कुछ दूर आगे समुद्र में एक विशाल चट्टान निकली हुई थी और यहां से जल-धारा दो भागों में बंट गई थी. कुछ आगे आने पर उसे धरती दिखाई देने लगी, तब उसकी जान में जान आयी. उसकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा. वह अपने को मौत के मुंह में समझ चुका था. धरती दिखने पर उसे अपने जीवन की आशा बंधी. वह नाव को लेकर उस धरती की ओर बढ़ाने लगा. पर शीघ्र ही यह बात उसकी समझ में आ गई कि यह तो वही टापू है, जिससे वह चला था. वास्तव में चट्टान के पास से जो धारा टापू की ओर मुड़ गई थी, उसकी नाव उसी धारा में बह रही थी. सांझ होने तक उसकी नाव किनारे आ लगी. दूसरे दिन सवेरे वह फिर चल

पड़ा और किनारे-किनारे चलता एक छोटी नदी के मुहाने पर आ पहुंचा. उसने नाव को समुद्र से नदी में मोड़ दिया. नदी में कुछ आगे बढ़ने पर उसने नाव बांध दी और धरती पर चलने लगा. अब वह अपनी उस दूसरी झोंपड़ी के पास पहुंच चुका था, जो उसने अंगूरों की बेलों के पास बनाई थी. उसने सीढ़ी पर चढ़कर बाड़ को लांघा और झोंपड़ी में जाकर सो रहा. थका हुआ तो था ही, उसे झट नींद आ गई. थोड़ी देर बाद नींद में ही उसने सुना कि कोई उसका नाम लेकर पुकार रहा है. वह हड़बड़ाकर उठ बैठा. वह समझ नहीं पा रहा था कि इस निर्जन प्रदेश में उसे कौन पुकार सकता है. झोंपड़ी से बाहर निकलकर उसने चारों ओर देखा तो पता लगा कि आवाज पेड़ पर से आ रही है. अब उसकी समझ में आया कि यह तो उसका तोता है.

अब राबिन्सन ने मन मारकर वहीं रहना प्रारंभ कर दिया. वह खेती करता, अपने उपयोग की चीजें बनाता और जाल में फंसाकर जानवरों को

मारता. वह बारूद को बचा रखना चाहता था, इसलिए बन्दूक से शिकार नहीं करता था. बकरियां उसके पास बहुत हो गई थीं. उन्हें उसने पालतू बना लिया. बकरियों को वह एक बड़े बाड़े में रखता और जब जरूरत पड़ती मांस के लिए काट लेता.

राबिन्सन की नाव जहां की तहां बंधी पड़ी थी और उसने कभी उसका उपयोग नहीं किया. यद्यपि समुद्र में नाव ले जाने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी, पर नदी में कभी कुछ ऊपर तक और कभी मुहाने तक सैर करने की उसकी इच्छा थी. समुद्र-यात्रा का खतरा वह इस छोटी नाव से मोल नहीं लेना चाहता था. वह मन-बहलाव के लिए नदी में नौका-विहार करता था.

एक दिन राबिन्सन नदी के तट पर फैली बालू पर से नाव की ओर जा रहा था. जब वह गीले बालू तट पर पहुंचा तो उस पर बने आदमी के पांव के निशान को देखकर भौंचक्का रह गया. उसके दिल की

धड़कन बढ़ गई वह घबरा गया. पांव का यह निशान उसके अपने पैर का तो था नहीं. तब फिर दूसरा कौन यहां आया ? कहां से आया और कहां गया ? यह किसके पैर का निशान है ? कितने ही प्रश्न उसके मन में एक साथ उठे.

राबिन्सन डरा-सहमा-सा एक चट्टान के पीछे छिप गया और ध्यान से इधर-उधर देखने लगा. पर वहां उसे कोई दिखाई नहीं दिया. वह बालू पर इधर-उधर पांव के और निशान खोजने लगा पर और कोई निशान नहीं मिला. उसे इस बात का डर लगा कि यह नया अजनबी उसे मार तो नहीं डालेगा. फिर उसने सोचा कि हो सकता है, वह मेरी चीजें चुराने आया हो. तरह-तरह की बातें सोचता वह अपनी झोंपड़ी को लौट चला. रास्ते में वह जरा-सा शब्द होने पर चौंक पड़ता और इधर-उधर देखने लगता कि कोई आ तो नहीं रहा है. उस रात उसे नींद नहीं आयी. वह लेटा-लेटा चौंक पड़ता. उसे लगता जैसे कोई उसे मारने आ रहा है. घबरा-

कर वह उठ बैठता पर वहां कोई नहीं होता.

दूसरे दिन उठकर उसने अपनी गुफा और झोंपड़ी अपने लिए और भी सुरक्षित बनाने का काम प्रारंभ कर दिया. उसने गुफा के दरवाजे में छोटे-छोटे छेद बनाए ताकि दरवाजा बन्द रखकर भी वह बाहर आनेवाले को देख सके और उन छेदों में से बन्दूक का निशाना भी लगा सके. इसी तरह फिर बहुत दिन बीत गए पर उसे दोबारा कहीं किसी के पैरों के निशान नहीं दिखाई दिए. पर राबिन्सन सदा चौकन्ना रहता और यों ही इधर-उधर नहीं घूमता. अब वह जब कभी बाहर निकलता तो तलवार, बन्दूक और पिस्तौल—तीनों चीजें अपने पास रखता.

एक दिन की बात है कि वह घूमता-फिरता टापू के पश्चिमी किनारे पर बहुत दूर निकल गया. जब उसकी दृष्टि समुद्र की सतह पर गई तो दूर उसे जहाज या नौका जैसा कुछ दिखाई पड़ा. पर वह निश्चय नहीं कर सका कि वह चीज वास्तव में

क्या है ? उसने निश्चय किया कि अब वह अपनी दूरबीन भी सदा साथ रखा करेगा.

यहां से वह कुछ आगे बढ़ा तो क्या देखता है कि मनुष्य की हड्डियां और खोपड़ियां पड़ी हुई हैं. पास ही बुझी आग का अलाव और मांस के कुछ अधजले टुकड़े भी पड़े हुए थे. यह सब देखकर तो उसका कलेजा ही मुंह को आने लगा. इस दृश्य को देखकर तो उसके होश ही गायब हो गए. उसे लगा कि उसके प्राण संकट में हैं. इन चीजों को देखकर स्पष्ट पता चलता था कि मनुष्यभक्षी जंगली लोग यहां आए थे और उन्होंने अपने पकड़े हुए आदमियों को यहां भूनकर भोग लगाया था.

जहाज के नाविकों से राबिन्सन ने सुन रखा था कि कई जगह ऐसे जंगली लोग रहते हैं जो मनुष्यों को पकड़कर खा जाते हैं. वे देवताओं को मनुष्य की बलि चढ़ाते हैं और फिर उन्हें भूनकर खा जाते हैं.

राबिन्सन ने यह सब सुना अवश्य था पर देखा

आज ही. इन हड्डियों को देखने से यह भी पता लगता था कि इनमें नई-पुरानी सब तरह की हड्डियां हैं. इससे अनुमान लगाया जा सकता था कि मनुष्य-भक्षियों का नर-बलि देने और मनुष्य-मांस का भोज उड़ाने का यह पक्का अड्डा था. उसने ईश्वर का धन्यवाद किया कि वह टापू के इस भाग में नहीं रहता है और अब तक इन मनुष्य-भक्षियों के चंगुल से बचा हुआ है. पर इतना तो स्पष्ट ही था कि इस टापू पर मनुष्य-भक्षियों ने कई लोगों को मारकर खाया था. वह घबराकर उलटे पैरों झोंपड़ी में भाग आया. दो वर्ष तक वह झोंपड़ी से दूर नहीं गया. न उसने उस नाव को कभी देखा, न हड्डियों के उस ढेर को. राबिन्सन मन में सोचता कि कभी अवसर मिला तो इन दुष्टों के चंगुल में फंसे हुए लोगों को छुड़ाने का पूरा प्रयत्न करूंगा और उन्हें अपनी बन्दूक का निशाना बनाऊंगा. उसके मन में आता कि उनके आग लगाने की जगह पर बारूद रख दिया जाए, जिससे जब वे आग जलाएं बारूद के भड़क उठने से

झुलसाकर मर जाए, पर बाद में उसने यह विचार छोड़ दिया. अब वह हड्डियों के ढेर के पास एक ऐसी जगह खोजने लगा जहां खूब छिपकर बैठा जा सके और मनुष्य-भक्षियों पर नज़र भी रखी जा सके ताकि अवसर आने पर उन्हें बन्दूक का निशाना भी बनाया जा सके. उसे ऐसी एक जगह मिल भी गयी, जहां बैठकर वह आस-पास अच्छी तरह देख सकता था. उसने निश्चय किया कि अब जब कभी ये जंगली यहां आएंगे मैं उन पर बन्दूक और पिस्तौल से निशाना लगाऊंगा और फिर तलवार से उनके टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा.

राबिन्सन अभी यह नहीं समझ पाया कि ये नरभक्षी दूसरी जगह से इस टापू में आते हैं या इसी टापू में रहते हैं. उसे यही लगता था कि ये लोग दूसरे किसी टापू से नावों पर बैठकर आते हैं और यहां आकर बलि चढ़ाते हैं. वह प्रतिदिन दूरबीन से समुद्र की तरफ देखता कि कोई नौका तो नहीं आ रही. पर कई मास तक उसे कुछ दिखाई नहीं

दिया. फिर तो उसने दूरबीन से देखना छोड़ दिया.

कभी-कभी वह सोचता, 'मुझे इन नरभक्षियों पर गोली चलाने का कोई अधिकार नहीं है. हां, यदि ये मुझ पर हमला करते हैं तब तो ठीक है'. फिर वह सोचता, 'यदि मैं उन पर गोली चलाता हूं और उनमें से कोई बच निकला तो वह अपने बहुत-से साथियों को ले आएगा और मुझे जान बचाना कठिन हो जाएगा'. इसलिए उसने हड्डियों के ढेर की ओर जाना ही छोड़ दिया और यह भी प्रयत्न किया कि उन नर-भक्षियों को इस टापू में किसी मनुष्य के होने का कोई चिह्न न मिले. इसी तरह एक साल बीत गया. साल भर में एक बार, हड्डियों के ढेर के पास बंधी अपनी नाव को खोलकर वह नदी में और ऊपर ले जाकर बांध आया था. सावधानी के तौर पर उसने बन्दूक चलाना, वृक्ष काटना और कील ठोंकना आदि कार्य बन्द कर दिए जिससे इनकी आवाज सुनकर नर-भक्षी उसकी उपस्थिति का पता

न लगा सके. उसने खुले स्थान में या रात को आग जलाना भी छोड़ दिया. दिन में धुएं को देखकर और रात में प्रकाश को देखकर उसकी उपस्थिति का पता लग सकता था. वह गहरे गड्ढे में लकड़ी जलाकर कोयले बनाता और उनसे भोजन पकाता. कोयलों को जलाने से न तो वैसा धुआं उठता और न लपटें.

एक दिन रॉबिन्सन कोयले बनाने के लिए गड्ढा खोद रहा था कि खोदते-खोदते एक चट्टान के नीचे उसे गुफा मिल गयी. वह गुफा में घुस गया. गुफा की छत इतनी ऊंची थी कि वह खड़ा हो सकता था. वह जब गुफा के भीतर पहुंचा तो कुछ देर तो उसे कुछ भी सुझाई नहीं दिया पर कुछ क्षण बाद उसे अपने सामने दो चमकती आंखें दिखाई दीं. वह मारे डर के पीछे हट गया और बाहर निकल आया. उसकी समझ में नहीं आया कि जमीन के नीचे दबी गुफा में कोई प्राणी कैसे हो सकता है. उसने सोचा, हो

सकता है मेरी आंखों ने धोखा खाया हो. इस भ्रम को दूर करने के लिए वह एक जलती हुई लुकाठी लेकर दोबारा भीतर घुसा. किसी के कराहने की करुण ध्वनि उसके कानों में पड़ी तो वह फिर सहम गया. पर हाथ में जलती लकड़ी होने के कारण उसकी हिम्मत बंधी और उसने लौ के प्रकाश में देखा कि सामने एक मरियल-सा बूढ़ा बकरा बैठा है. राबिन्सन ने उसे पैर से ठेला ताकि वह उठ जाए पर वह नहीं उठा. राबिन्सन ने उसे वैसे ही छोड़ दिया. अब वह गुफा को अच्छी तरह देखने लगा. दस-बारह फुट चौड़ी इस गुफा में दूसरी ओर भी एक छेद था पर था बहुत छोटा. लकड़ी बुझने को थी इसलिए वह बाहर निकल आया.

राबिन्सन ने बकरियों की चर्बी की मोमबत्तियां बना ली थीं. दूसरे दिन वह एक मोमबत्ती लेकर फिर गुफा में पहुंचा तो वह बकरा मरा पड़ा था. वह दूसरी ओर के छेद की तरफ बढ़ा और उसमें रेंगकर आगे जा निकला. यह एक बड़ा विशाल

कमरा जैसा था. इसकी छत बहुत ऊंची थी और दीवारें मोमबत्ती के प्रकाश में चमक रही थीं यह सूखी और साफ-सुथरी जगह थी और सुरक्षित भी. यहां पहुंचने का मार्ग जरूर संकरा था. वैसे यह जगह पहली जगह से प्रत्येक दृष्टि से उपयुक्त थी. राबिन्सन पुरानी गुफा से अपना सामान उठाकर यहां ले आया.

राबिन्सन को इस टापू पर रहते बाईस वर्ष हो चले थे. अब उसे अपने घर-बार और माता-पिता की याद कम ही आती. वह यहां रहने का अभ्यस्त हो गया था हां, कभी-कभी उसे जंगली नर-भक्षियों का भय अवश्य सताता था यद्यपि आज तक उसने उन्हें देखा तक नहीं था. खाने के लिए अनाज, मांस और फल उसे मिल जाते थे. तम्बाकू और ईख का भी अभाव नहीं था. हां, एक बात सोचकर वह कभी-कभी उदास हो जाता था कि जब वह बूढ़ा और दुर्बल हो जाएगा, उसमें काम करने की शक्ति नहीं रहेगी तब क्या होगा ! क्या उसे भी उस बूढ़े बकरे की

तरह एड़ियां रगड़ते हुए प्राण देने पड़ेंगे. वह सोचता कि कभी तो कोई जहाज यहां से गुजरेगा, जिसमें बैठकर वह लोगों के बीच पहुंच सकेगा पर यह आशा भी क्षीण होती जा रही थी. पिछले बाईस वर्षों में कोई जहाज नहीं आया था तो आगे का क्या भरोसा. उदासी और निराशा से बचने के लिए वह सदा काम में लगा रहता. खेती-बाड़ी, अंगूरों को तोड़कर सुखाना, पालतू बकरियों की देखभाल करना, मछली मारना, आटा पीसना, भोजन बनाना—इतने काम उसके पास थे.

एक दिन तड़के ही वह खेत काटने के लिए निकल पड़ा. चलते-चलते जब उसकी दृष्टि समुद्र तट की ओर गयी तो उसका कलेजा धक्-धक् करने लगा. उसे वहां धुएं का बादल उठता दिखाई दिया. उसने सोचा कि अवश्य नर-भक्षी लोगों ने रात यहां नर-बलि दी होगी और आग जलाई होगी. वह उलटे पांव अपनी गुफा में लौट आया और ऊपर चढ़कर सीढ़ी खींच ली. बन्दूक और पिस्तौल को बारूद भर,

कर तैयार कर लिया और उनके मुंह दरवाजे के छेदों में लगा दिए. वह आने वाले संकट का सामना करने के लिए तैयार हो गया. कुछ समय बीतने पर वह गुफा की चट्टान पर जा चढ़ा और दूरबीन लगाकर उस ओर देखने लगा, जहां धुआं उठ रहा था. उसने जलते हुए अलाव के पास आठ-नौ नर-भक्षियों को बैठे देखा. थोड़ी ही देर बाद वे नर-भक्षी अलाव के चारों ओर नाचने लगे. उनके हाथों में भाले थे और वे नंग-धड़ंगे दिखाई दे रहे थे. राबिन्सन देर तक उनके इस भद्दे नाच को देखता रहा. उनकी नाव पास ही तट पर खड़ी थी. कुछ घंटों बाद जब ज्वार आया तो वे नावों पर सवार होकर चले गए. उनके जाने के बाद राबिन्सन नीचे उतरा और अलाव के पास पहुंचा. वहां का दृश्य बड़ा घिनौना था. चारों ओर हड्डियां और खोपड़ियां बिखरी पड़ी थीं और ताजा मांस के टुकड़े तथा लहू के धब्बे भी थे. नर-भक्षियों के डर से वह सहमा-सहमा-सा रहता था पर उसे क्रोध भी आ रहा था. इन असभ्य नर-भक्षियों

पर वह भविष्य में जरूर गोली चलाएगा, मन में यह पक्का निश्चय उसने कर लिया.

अब फिर वह तरह-तरह की बातें सोचकर बेचैन रहने लगा. इन नर-भक्षियों ने उसकी भूख और नींद छीन ली थी. वह नींद में चौंक-चौंक पड़ता और डरावने सपने देखकर उसकी चीख निकल जाती. जरा-सी भी आहट सुनकर उसके रोंगटे खड़े हो जाते और दिल धक-धक करने लगता.

सर्दियों में एक दिन बड़े जोर की आंधी आयी और फिर मूसलाधार पानी बरसने लगा. रात को भी यही हाल रहा. उसने एक नाविक के सन्दूक में मिली बाइबिल को निकाला और मोमबत्ती की लौ में पढ़ने लगा. इतने में उसे बड़े जोर का धमाका सुनाई दिया. थोड़ी देर बाद दूसरा धमाका हुआ. राबिन्सन को यह समझते देर नहीं लगी कि यह तोप छूटने की आवाज है जो समुद्री तूफान में फंसे किसी जहाज से आ रही है. जहाज जब संकट में फंस जाते

है तो सहायता मांगने के लिए ऐसी आवाज करते हैं ताकि दूर-दूर तक पता लग जाए. राबिन्सन झट गुफा से बाहर निकला और ऊंचे टीले पर चढ़कर समुद्र की ओर देखने लगा. उसे टापू के अन्तिम छोर पर तोप छूटने की लपट दिखाई दी, जिसके कुछ क्षण बाद फिर धमाका हुआ. उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि वह कैसे इस जहाज की सहायता करे. उसे इस फंसे जहाज में ही अपने यहां से निकलने की आशा की किरण दिखाई दी. उसने जलाने के लिए रखी लकड़ियों का ऊंची जगह ढेर लगाया और फिर उसमें आग लगा दी ताकि जहाजवाले भी समझ जाएं कि इस निर्जन टापू में भी कोई संकट में फंसा पड़ा है. हो सकता है, वे तूफान में बच गए तो उसकी सहायता को इधर चले आएं. आग जल उठने के बाद जहाज से फिर तोपें दागी गयीं. राबिन्सन ने अनुमान लगाया कि उसका संकेत जहाज वालों ने देख लिया है. उसने सारी रात रात आग जलाए रखी. सवेरा होने तक तूफान थम

चुका था. उसे पूरब में एक जहाज दिखाई दिया. पर धुंध के कारण वह पूरे विश्वास के साथ नहीं कह सकता था कि वह जहाज ही था और वह लंगर डाले खड़ा था या चल रहा था. जब सूरज चमकने लगा और धुंध साफ़ हो गयी तो उसने एक ऊंचे टीले पर चढ़कर दूरबीन से जहाज की ओर देखा. उस समुद्री चट्टान के पास, जिसके कारण धारा दो भागों में बंट जाती थी, एक जहाज खड़ा था. जहाज की हालत ठीक नहीं थी. चट्टान से टकराकर वह लगभग टूट चुका था. उस पर कोई आदमी भी दिखाई नहीं देता था. राबिन्सन ने सोचा कि हो सकता है, सभी डर मर गए हों. उसे इस बात का खेद था कि वह उन्हें बचाने के लिए कुछ भी नहीं कर सका.

जब समुद्र शान्त हो गया तो राबिन्सन ने तूफान में नष्ट हुए जहाज पर जाने का निश्चय किया. वह एक बार आगे भी अपनी डोंगी पर बैठकर वहां तक

जा चुका था. पर उस बार धारा बहाकर उसे वहां ले गयी थी और संयोग से दूसरी धारा उसे वापस टापू तक ले आयी थी. इसलिए वहां तक इस छोटी नाव पर बैठकर जाना खतरे से खाली तो था नहीं. फिर भी उसने हिम्मत कर डाली. नाव में खाने-पीने का काफी सामान रखकर और दिशासूचक यंत्र लेकर वह नाव में जा बैठा. दो घंटे में वह जहाज तक जा पहुंचा. जहाज की हालत बड़ी खराब थी. यह कोई स्पेनी जहाज था और दो चट्टानों के बीच फंसा पड़ा था. तूफान के थपेड़ों से जहाज टूट-फूट चुका था. जहाज पर एक कुत्ते को छोड़कर कोई जीवित प्राणी नहीं था. राबिन्सन को देखते ही कुत्ते ने जहाज से छलांग लगा दी और तैरकर राबिन्सन की नाव पर चढ़ आया. राबिन्सन ने उसे पुचकारा और पानी पिलाया. राबिन्सन जहाज पर जा चढ़ा. रसोईघर में उसे आपस में लिपटे दो आदमी मरे हुए मिले. जहाज का सामान भी तूफान में बह चुका था. नाविकों के दो सन्दूक उसने अपनी नाव पर रख

लिए, इन सन्दूकों में पहनने के कपड़े, कुछ मिठाइयां और सोने की मुहरों की थैलियां थीं. एक तरह से यह सोना राबिन्सन के किसी काम का नहीं था. फिर भी उसने ले लिया. हां, यह कुत्ता उसे सबसे अच्छा लगा. पहले भी उसके पास एक कुत्ता था किन्तु वह मर चुका था. उसने अपनी नाव टापू की ओर आने वाली धारा में डाल दी और सकुशल टापू पर लौट आया. नाव को बांधकर सामान उसने गुफा में ला रखा. कुत्ता उसके साथ बहुत जल्दी हिल-मिल गया. वह सदा उसे अपने साथ ही रखता. वह कुत्ते के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार करता और अपने दुःख-सुख की बातें यों सुनाता रहता जैसे वह कुत्ता न होकर मनुष्य हो.

टूटे हुए जहाज और मरे हुए लोगों को देखकर राबिन्सन का मन उदास हो गया. उसे घर की याद सताने लगी. पर वहां से निकलने का कोई उपाय नहीं था. उसकी छोटी-सी नाव समुद्र-यात्रा के काम की नहीं थी. किसी आदमी के साथ बात

किए उसे एक युग बीत चला था. बीच में आदमी की शक्ल देखने को मिली भी तो नर-भक्षियों की. कभी-कभी उसके मन में आता कि यहां अकेले रहने से तो नर-भक्षियों के बीच रहना ही अच्छा. वह इस बात को भूल ही जाता कि नर-भक्षी उसे भी अपना भोजन बना सकते हैं. वह सोचता कि क्या ही अच्छा होता जो मुझे अपनी जाति का कोई गोरा व्यक्ति मिल जाता.

एक रात वह इसी तरह की बातें सोचता-सोचता सो गया तो नींद में उसने यह सपना देखा—समुद्र तट पर दो नावें खड़ी हैं और उनमें से नर-भक्षी जंगली टापू पर उतर रहे हैं. वे संख्या में ग्यारह हैं और एक अन्य आदमी है जिसके हाथ पीछे बंधे हुए हैं. ये जंगली उस आदमी को मारकर खाने के लिए लाए हैं. एकाएक वह आदमी उनके चंगुल से भाग निकलता है और लुकता-छिपता गुफा के पास की ऊंची बाड़ के पास पहुंच जाता है. राबिन्सन उसकी सहायता के लिए आगे बढ़ता है तो पता चलता है कि यह आदमी

भी उन्हीं की जाति का है. वह आदमी राबिन्सन के पैरों पर गिर पड़ता है और अपनी प्राण-रक्षा करने की प्रार्थना करता है.

राबिन्सन ने सीढ़ी लगाकर उसे पेड़ों की बाड़ के भीतर खींच लिया. राबिन्सन को एक साथी मिल जाने की बड़ी भारी प्रसन्नता हुई. इतने में उसकी नींद टूट गयी नींद खुलने पर सपने की सारी प्रसन्नता जाती रही. किन्तु उसने निश्चय किया कि मुझे नर-भक्षियों द्वारा पकड़े हुए किसी आदमी को छुड़ाकर अपना साथी बनाना चाहिए और फिर उसकी सहायता से इस टापू से निकल भागना चाहिए. यह सोचकर वह समुद्र में देखता रहता कि कोई नाव इधर तो नहीं आ रही है. वह डेढ़ वर्ष तक प्रतिदिन इसी तरह देखता रहा किन्तु नर-भक्षी इस टापू पर नहीं आए. ऊबकर उसने उस पर नजर रखना छोड़ दिया.

कई दिनों बाद जब वह बड़े सवेरे उठा तो क्या देखता है कि उसकी गुफा के पास वाले समुद्र तट पर

नर-भक्षियों की पांच नावें खड़ी हैं. नावें वालों की और वे जंगली आस-पास कहीं भी दिखाई नहीं दे रहे थे. उसने अनुमान लगाया कि पांच नावों में बीस लोग अवश्य आए होंगे. बीस नर-भक्षियों का सामना करने का उसे साहस नहीं पड़ा. वह वापस गुफा में जा छिपा और बन्दूकों को भरकर तैयार करने लगा.

कुछ देर बाद उसने फिर यह देखने का प्रयत्न किया कि आखिर वे यहां कर क्या रहे हैं. वह गुफा के ऊपर वाली चट्टान पर जा चढ़ा और लेटकर दूरबीन से इधर-उधर देखने लगा. उसने देखा कि बड़ी चट्टान की ओट में उन लोगों ने आग जलाई हुई है और उसके चारों ओर नाच रहे हैं. वे संख्या में तीस-पैंतीस से कम नहीं थे. कुछ देर नाच के बाद वे दो कैदियों को नावों में से खींच लाए. उनमें से एक कैदी की पीठ पर एक नर-भक्षी ने मोटी लकड़ी से चोट मारी तो वह मुंह के बल रेत पर गिर पड़ा. फिर तो दूसरों ने उसे काट-काटकर आग में भूनना

प्रारम्भ कर दिया. दूसरा बन्दी भय से कांपता चुपचाप खड़ा था और अपनी मौत की घड़ियां गिन रहा था. एकाएक यह बन्दी वहां से भाग खड़ा हुआ और छिपने के लिए जगह ढूंढने लगा. वह राबिन्सन की गुफा की ओर ही भागा चला आ रहा था. उसे अपना सपना सच्चा होता दिखाई दिया. नर-भक्षी उसका पीछा कर रहे थे और उनमें से तीन, जिनके हाथ में धनुष-बाण थे, उसके कुछ पास थे. भागता-भागता वह उस जगह आ पहुंचा जहां एक छोटा नाला समुद्र में मिलता था. वह नाले में कूदकर दूसरी ओर चला गया और फिर भागने लगा. पीछा करने वालों में से दो नाले में कूद पड़े किन्तु नाला पार करने में और भी पिछड़ गए. तीसरा नाले के किनारे खड़ा होकर सुस्ताने लगा.

राबिन्सन को लगा कि भगोड़े की सहायता करने का यही सबसे उपयुक्त अवसर है. इसके लिए अब उसे केवल दो नर-भक्षियों का सामना करना था. वह जल्दी-जल्दी चट्टान से नीचे उतरा और दो

बन्दूक लेकर दौड़ पड़ा. थोड़ी ही देर में वह भगोड़े के कुछ पास जा पहुंचा और चिल्लाकर उसे खड़ा रहने को कहने लगा. किन्तु भगोड़ा राबिन्सन के विचित्र पहनावे को देखकर और भी डर गया तथा पहले से भी ज्यादा तेजी से भागने लगा. अब तक दोनों नर-भक्षी भी दौड़ते हुए राबिन्सन के कुछ पास पहुंच गए थे. वे भी राबिन्सन को देखकर घबरा गए. उसकी वेशभूषा ही ऐसी थी, जिससे वह चौपाया जानवर लगता था. राबिन्सन ने घबराए हुए एक नर-भक्षी को रोककर उसके सिर पर बन्दूक का कुन्दा दे मारा. चोट खाकर वह धरती पर गिर पड़ा. राबिन्सन गोली चलाना नहीं चाहता था क्योंकि गोली की आवाज सुनकर दूसरे नर-भक्षी भी वहां आ जाते. किन्तु दूसरे नर-भक्षी ने जब अपने साथी को गिरा हुआ देखा तो राबिन्सन पर बाण चलाने को तैयार हो गया. राबिन्सन ने उसे देख लिया था, इसलिए उस पर गोली दागना आवश्यक था. निशाना साध-कर राबिन्सन ने बन्दूक का घोड़ा दबाया तो जोर

का धमाका हुआ और नर-भक्षी वहीं गिर पड़ा. भगोड़े ने जब बन्दूक चलने की आवाज़ सुनी और एक नर-भक्षी को गोली से मरते देखा तो मारे डर के कांपने लगा. राबिन्सन ने उसे संकेतों द्वारा समझा-बुझाकर अपने साथ चलने को तैयार कर लिया. वह आदमी सहमा-सा साथ चलने लगा और बार-बार राबिन्सन के पैरों में गिरकर गिड़गिड़ाने लगा.

बन्दूक के कुन्दे से घायल नर-भक्षी कुछ हिलने-डुलने लगा तो राबिन्सन ने भगोड़े को संकेत से समझाया कि इसे मारो. भगोड़े ने कुछ कहा पर राबिन्सन की समझ में कुछ नहीं आया. जब भगोड़े ने देखा कि उसे बचाने वाला उसकी बोली नहीं समझता है तो उसने राबिन्सन की कमर में लटकती तलवार की ओर संकेत किया. राबिन्सन ने अपनी तलवार उसके हाथ में थमा दी. तलवार लेकर वह उस नर-भक्षी पर झपटा और एक बार में ही उसका सिर काटकर अलग कर पड़ा. वह सिर को उठा लाया और राबिन्सन के पैरों में रख दिया. तलवार

वापस उसके हाथ में दे दी. इस भगोड़े को इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ कि राबिन्सन ने इतनी दूर से ही कैसे उस आदमी को मार डाला जो उस पर बाण चलाने की तैयारी कर रहा था. वह उस मृतक के पास जाकर उसे उलट-पलटकर देखने लगा कि यह कैसे मरा है. वह गोली से हुए घाव और बहते खून को देखता रहा.

राबिन्सन ने उसे वापस बुलाया तो उसने संकेत से समझाया कि वह इन दोनों की लाशों को धरती में गाड़ेगा, तब चलेगा. फिर उसने हाथ से रेत को हटाकर गड्ढे बनाए और दोनों को उनमें लिटाकर ऊपर से रेत डालकर ढक दिया. फिर वह राबिन्सन के पास जा पहुंचा.

राबिन्सन उसे अपनी पुरानी गुफा में न ले जाकर नई गुफा में ले गया. उसे खाने-पीने को देकर एक ओर सो जाने के लिए कहा. लेटते ही उसे गहरी नींद आ गयी. अब राबिन्सन ने उसे ध्यान से देखा. वह गठे शरीर का, कोई चौबीस-पच्चीस वर्ष का

युवक था. काले और लम्बे बालों के कारण वह देखने में बुरा नहीं लगता था. उसके दांत सफेद, रंग लाल और चेहरा यूरोपवासियों जैसा था.

सवेरे राबिन्सन उठा और काम में लग पड़ा. उसने नए आदमी को नहीं जगाया. जब उस आदमी की नींद खुली तो वह राबिन्सन के पास गया और सिर झुकाकर उसके पैर छुए. वह राबिन्सन के प्रति बड़ा कृतज्ञ था क्योंकि राबिन्सन ने उसकी जान बचाई थी.

क्योंकि वे एक-दूसरे की भाषा नहीं जानते थे, इसलिए राबिन्सन संकेतों द्वारा उसे समझाने और काम बताने लगा. राबिन्सन ने उसे अपनी भाषा सिखाने का निश्चय किया और सबसे पहले 'हां' और 'नहीं' कहना सिखाया. फिर उसे समझाया कि वह उसे 'मालिक' कहा करे और राबिन्सन ने उसका नाम 'फ्राइडे' रखा क्योंकि जिस दिन उसने उसे नर-भक्षियों से बचाया था, उस दिन शुक्रवार था.

फ्राइडे जल्दी-जल्दी राबिन्सन के बताए कामों

को करने लगा और उसकी सिखाई भाषा को सीखने लगा. वह राबिन्सन के साथ रहकर प्रसन्न था. पर जब राबिन्सन ने उसे खाल के कपड़े पहनने को दिए तो उसे बड़ा अटपटा लगा. उसने कभी कपड़े नहीं पहने थे. उसके प्रदेश में कपड़े पहनने की आवश्यकता भी नहीं पड़ती थी क्योंकि वह गर्म प्रदेश था पर राबिन्सन तो सभ्य प्रदेश का वासी था और सभ्य लोग नंगे नहीं रहते.

दूसरे दिन राबिन्सन फ्राइडे को साथ लेकर यह पता लगाने निकला कि शेष नर-भक्षी टापू से चले गए या नहीं।

वे सब जा चुके थे, पर अलाव में अभी तक आग जल रही थी। उसके आस-पास अधजले मांस के टुकड़े और हड्डियां पड़ी हुई थीं.

फ्राइडे ने राबिन्सन को बताया कि मेरे साथ तीन कैदी और थे, जिन्हें वे मारकर खा गए हैं. राबिन्सन के कहने से फ्राइडे ने लकड़ियां इकट्ठी कीं और सारी हड्डियों को इकट्ठा करके आग में

जला दिया. फ्राइडे स्वयं भी नर-भक्षी था इसलिए उसे इन हड्डियों को इकट्ठा करते ज़रा भी घिन नहीं हुई. फिर वे दोनों वहां पहुंचे जहां कल दो नर-भक्षियों को मारकर रेत में गाड़ा गया था. फ्राइडे ने संकेत से इन मुर्दों को खाने की इच्छा प्रकट की तो राबिन्सन उस पर बहुत बिगड़ा. राबिन्सन की डांट-डपट से फ्राइडे समझ गया कि 'मालिक' को यह काम पसन्द नहीं है.

फ्राइडे भी था तो नर-भक्षी ही. राबिन्सन उस पर विश्वास नहीं करता था. वह रात को स्वयं तो गुफा में सोता और फ्राइडे को बाहर की झोंपड़ी में सुलाता. गुफा में जाकर वह सीढ़ी ऊपर खींच लेता ताकि फ्राइडे उस तक न पहुंच सके.

फ्राइडे 'मालिक' के बताए सारे कामों को करता. 'मालिक' भी उस पर प्रसन्न रहता. अब फ्राइडे बहुत-सी चीज़ों के नाम सीख गया था और राबिन्सन की बातों को कुछ-कुछ समझने लगा था. राबिन्सन को एक अच्छा साथी और अच्छा नौकर

मिल गया था. अब वह किसी से बात कर सकता था और उससे बात करनेवाला भी कोई था. अब उसे यह डर नहीं था कि कभी बीमार पड़ गया तो उसे पानी कौन पिलाएगा।

बहुत सी बातें फ्राइडे समझ गया था पर बन्दूक के धमाके से दूर का जानवर कैसे मर जाता है, यह उसकी समझ में नहीं आता. वह बन्दूक को कोई जादू की चीज़ समझता था और उससे बहुत डरता था. क्योंकि बन्दूक की गोली निकलती दिखाई नहीं देती इसलिए वह मौत का कारण धमाके को ही समझता था. पहले दिन जब राबिन्सन ने गोली मारकर एक नर-भक्षी को मार गिराया था तब भी उसे बड़ा आश्चर्य हुआ था और वह उसे उलट-पलट मरने के कारण का पता लगाने का प्रयत्न करता रहा था. वह बन्दूक को छूने से भी डरता था. उसका विचार था कि इससे मेरी बड़ी हानि होगी. अगर राबिन्सन कहीं बाहर गया होता, फ्राइडे बन्दूकों को दूर से हाथ जोड़ता और प्रार्थना करता कि वे

उस पर दया-दृष्टि रखें और उसके प्राणों पर कोई संकट न आए.

बाहर से आते राबिन्सन को कभी-कभी उसका कुछ बड़बड़ाना सुनाई देता पर समझ नहीं पाता. बाद में जब राबिन्सन उसकी बोली समझने लगा तो उसकी इस मूर्खता पर बहुत हंसा. राबिन्सन ने धीरे-धीरे फ्राइडे को कामचलाऊ अंग्रेजी बोलना भी सिखा दिया.

फ्राइडे को भोजन में नमक बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था. जंगली जाति के लोग अपने भोजन में नमक का प्रयोग कतई नहीं करते. फ्राइडे ने राबिन्सन को बताया कि हम गोरे लोगों का मांस खाना पसन्द नहीं करते क्योंकि वह कुछ-कुछ नमकीन होता है. अपने कबीले से बाहर के जंगली लोगों का मांस ही हमें पसन्द है. हां, समुद्र का खारा पानी कभी-कभी दवा के रूप में अवश्य प्रयोग करते हैं.

राबिन्सन के पूछने पर फ्राइडे ने बताया कि वह इस द्वीप पर पहले भी कई बार आ चुका है और एक

बार उन लोगों ने दूसरे कबीले के कोई बीस लोगों की बलि देकर उनका मांस खाया था. उसका अपना कबीला शक्ति में माना हुआ कबीला है. जिस कबीले के लोग उसे पकड़कर लाए थे, उस कबीले के साथ उसके कबीले की बड़ी पुरानी शत्रुता है. अवसर मिलने पर एक-दूसरे कबीले के लोगों को पकड़ लेते हैं और खा जाते हैं. कभी-कभी एक कबीला दूसरे कबीले पर आक्रमण कर देता है और जमकर लड़ाई होती है. दोनों पक्षों के बहुत-से लोग मारे जाते हैं.

इस जंगली नर-भक्षी को यह समझाने में राबिन्सन को कई दिन लग गए कि मनुष्य का मांस खाना बुरी बात है. क्योंकि फ्राइडे राबिन्सन को अपने से ज्यादा शक्तिशाली मानता था और उसने फ्राइडे की जान भी बचाई थी, इसलिए वह राबिन्सन की बात मान लेता था. धीरे-धीरे राबिन्सन ने उस जंगली को अंग्रेजों जैसा रहन-सहन सिखा दिया. पर कुल मिलाकर राबिन्सन भी तो जंगली जीवन ही बिता रहा था. हां, इतनी बात अवश्य थी कि वह जंगली

जीवन उसने विवशता में अपनाया था.

उन दोनों के दिन अच्छी तरह कटने लगे. वे एक-दूसरे की सहायता करते और मिल-जुलकर सारा काम करते. एक दिन राबिन्सन ने फ्राइडे से पूछा, "तुम्हारा घर इस टापू से कितनी दूर है और क्या वहाँ तक नाव में जाया जा सकता है ?"

फ्राइडे ने बताया कि यहाँ से बहुत दूर नहीं है. अच्छी-सी नाव हो तो बड़े आराम से वहाँ पहुँचा जा सकता है. फिर फ्राइडे ने अपने प्रदेश और कबीले की बहुत-सी बातें बताईं. उसने बताया, "हमारे प्रदेश के एक ओर गोरे रंग वाले लोगों का देश है. गोरे लोगों के बारे में काले लोगों की राय अच्छी नहीं है. गोरे लोग काले लोगों को मार डालते हैं."

राबिन्सन ने अनुमान लगाया कि ये गोरे लोग स्पेन वाले होंगे क्योंकि स्पेन वाले काले लोगों को पकड़कर दास बना लेते थे और उनके साथ जानवरों से भी बुरा व्यवहार करते थे.

राबिन्सन ने बातों-बातों में फ्राइडे से पूछा,

"क्या मैं उन गोरे लोगों तक पहुंच सकता हूं ?"

फ्राइडे ने कहा, "हां, क्यों नहीं. एक अच्छी-सी नाव पर बैठकर पहुंच सकते हो."

अब राबिन्सन ने उसे अपनी नाव दिखाई. राबिन्सन ने अपने जहाज के तूफान से टूटने की कहानी भी फ्राइडे को सुनाई. उसने जहाज का टूटा-फूटा सामान फ्राइडे को दिखाया और टूटी हुई नाव भी जिस पर वह अपने साथियों समेत जहाज से निकला था. फ्राइडे गुमसुम-सा सब-कुछ देखता रहा.

राबिन्सन ने पूछा, "तुम चुप क्यों हो, क्या बात है ?"

फ्राइडे ने कहा, "मैंने ऐसी नाव एक बार पहले भी देखी है." पर वह यह नहीं बता सका कि नाव उसने कब और कहां देखी थी. फिर उसने उंगलियों पर गिनकर बताया कि उस नाव में सत्रह लोग सवार थे. उन लोगों ने ही उन्हें समुद्र में डूबने से बचाया था.

राबिन्सन ने फिर प्रश्न किया, "अब वे सत्रह

लोग कहां हैं ?"

तब फ्राइडे ने कहा, "वे सब-के-सब जीवित हैं और हमारे कबीले के लोगों के साथ रहते हैं."

राबिन्सन ने अनुमान लगाया कि संभव है ये उस जहाज से बचे हुए लोग हों जो वहां दो चट्टानों के बीच फंस गया था और जिसने रात को तोपें दागकर अपने संकट में फंसे होने का संकेत दिया था. इस जहाज पर से राबिन्सन एक कुत्ता और कुछ सामान निकाल लाया था.

फ्राइडे ने कहा, "हमारे कबीले के लोगों ने उन लोगों को खाना खिलाया और अपने साथ रहने को जगह दी."

राबिन्सन को नर-भक्षी जंगलियों के ऐसे अच्छे व्यवहार की बात सुनकर आश्चर्य हुआ. उसने पूछा, "तुम्हारे कबीले के लोगों ने उन्हें मारकर खाया क्यों नहीं ?"

फ्राइडे ने कहा, "हम उन्हीं लोगों को मारकर खाते हैं जिन्हें लड़ाई में पकड़ते हैं, औरों को नहीं."

दिन बीतते गए. एक दिन राबिन्सन और फ्राइडे टापू के पूरब में घूमने गए और एक ऊंचे टीले पर जा चढ़े. उस दिन आकाश एकदम निर्मल था. फ्राइडे लगातार दूर दृष्टि गड़ाए देख रहा था. कुछ देर बाद वह मारे प्रसन्नता के उछलने लगा और उंगली से दिखाता हुआ बोला, "वह देखो, वह रहा मेरा देश. वह जो दूर नीला-सा दिखाई दे रहा है, वही उसका किनारा है." कहते-कहते फ्राइडे की आंखें चमकने लगीं.

मातृभूमि के प्रति ऐसी ललक फ्राइडे में देखकर राबिन्सन को चिन्ता होने लगी. उसने सोचा, यह पक्षी तो अवसर मिलते ही उड़ जाएगा और अपने देश में जा पहुंचेगा. उसे दो तरह का डर था, एक तो साथी और सहायक के खो जाने का और दूसरा यह कि कहीं यह वहां से अपने कबीले के लोगों को साथ लाकर मुझ पर आक्रमण तो नहीं कर देगा. पर यह राबिन्सन के अपने ही मन की कल्पना थी. फ्राइडे ने इस तरह की बात कभी नहीं सोची थी.

कुछ दिनों बाद फिर जब वे दोनों उसी टीले

पर पहुंचे तो राबिन्सन ने फ्राइडे के मन की बात जानने के लिए पूछा, "फ्राइडे यदि तुम किसी तरह अपने देश पहुंच जाओ तो बड़ी प्रसन्नता होगी न ?"

"हां मालिक, प्रसन्नता तो होगी ही." फ्राइडे ने कहा.

"फिर तो तुम पहले की तरह आदमियों को मारकर खाने लगोगे ?" राबिन्सन ने दूसरा प्रश्न किया.

"नहीं मालिक, कभी नहीं" फ्राइडे ने कहा.

फिर फ्राइडे के मन की थाह लेने के लिए राबिन्सन ने पूछा, "फिर तुम अपने देश को क्यों नहीं चले जाते ?"

"बहुत दूर है, मालिक ! इतनी दूर मैं तैरकर कैसे जा सकता हूं ?" फ्राइडे ने सरल भाव से कहा.

पर राबिन्सन तो उसके मन की बात उगलवाना चाहता था. उसने कहा, "यदि तुम्हें एक नाव मिल जाए तो जाओगे ?"

"हां, तब जा सकता हूं. पर मैं अकेला नहीं

जाऊंगा. मालिक ! आपको भी साथ जाना होगा."
स्वामीभक्त फ्राइडे ने कहा.

"न बाबा ! तुम्हारे कबीले के लोग मुझे मारकर खा जाएंगे. मैं ऐसे लोगों के पास कभी नहीं जाऊंगा." राबिन्सन ने मुसकराते हुए कहा.

फ्राइडे ने राबिन्सन की बात काटते हुए कहा, "नहीं, कभी नहीं. वे हर किसी को थोड़े ही खाते हैं. आपने मेरी जान बचाई है, यह जानकर मेरे कबीले के लोग आप पर प्रसन्न होंगे और आपका बड़ा आदर करेंगे."

राबिन्सन ने सोचा, 'यदि मैं इसके देश चला जाऊं तो वहां मुझे वे सत्रह गोरे भी मिल जाएंगे और हम सब मिलकर एक बड़ी और बढ़िया नाव बनाकर वहां से अपने देश इंग्लैंड चले आएंगे.' पर पता नहीं क्यों, उसे अब भी फ्राइडे के कहने पर पूरा विश्वास नहीं था.

अगले दिन राबिन्सन फ्राइडे को उस जगह ले गया जहां नदी में उसने अपनी नाव छिपाकर बांध

रखी थी. वे दोनों नाव में जा बैठे और फ्राइडे चप्पू चलाने लगा. उसे नाव खेते देखकर राबिन्सन ने अनुमान लगा लिया कि यह तो मुझसे भी बढ़िया नाव चला लेता है.

राबिन्सन ने फ्राइडे से पूछा, "क्या हम इस नाव पर बैठकर तुम्हारे देश पहुंच सकते हैं ?"

फ्राइडे ने अस्वीकृतिसूचक सिर हिलाते हुए कहा, "यह बहुत छोटी नाव है. लहर के एक ही धक्के से उलट जाएगी."

फिर राबिन्सन ने उसे वह नाव दिखाई जो उसने सबसे पहले बनाई थी किन्तु भारी होने के कारण पानी तक नहीं पहुंचा सका था.

फ्राइडे ने नाव देखी. यह नाव वैसे तो ठीक थी पर बीस-बाईस साल से यों ही पड़ी रहने के कारण बेकार हो चुकी थी. यह कई जगह से टूट भी गयी थी. कुछ सोचकर राबिन्सन ने कहा, "मैं इससे भी बड़ी नाव तुम्हें बनाकर दूंगा. तुम उस पर बैठकर अपने देश को लौट जाना. मैं तो अब यहां से कहीं

नहीं जाऊंगा."

राबिन्सन की बात सुनकर फ्राइडे का चेहरा मुर्झा गया. वह बोला, "मालिक ! क्या तुम मुझसे नाराज हो ? अगर तुम मेरे साथ नहीं जाओगे, तो मैं भी यहां से नहीं जाऊंगा."

उसके ऐसे अटूट प्रेम की बात सुनकर राबिन्सन को उस पर पूरा-पूरा विश्वास हो गया.

अब दोनों ने मिलकर एक बड़ी-सी नाव बनानी प्रारम्भ कर दी. कौन-से वृक्ष की लकड़ी नाव के लिए बढ़िया होती है, यह फ्राइडे खूब जानता था, पर तने को औजारों से छीलकर खोखला बनाना उसे नहीं आता था. उसके कबीले के लोग आग से जला-जलाकर खोखला करके नाव बनाते थे. पर राबिन्सन के पास तो औजार थे. वह नाव को छील-काटकर खोखला बनाने लगा. फ्राइडे ने भी औजारों से काम करना सीख लिया और कोई सवा महीने में उनकी नाव बनकर तैयार हो गयी. नाव तैयार हो जाने से

दोनों प्रसन्न थे क्योंकि इससे अपने देश और अपने लोगों के बीच पहुंच जाने की आशा बंध गयी थी. नाव तैयार करके उन दोनों ने एक दिन छुट्टी मनाई.

अब इस नाव को धरती से पानी में पहुंचाने का काम बाकी था. नाव बड़ी भारी थी. यह काम बहुत कठिन था. पर एक और एक तो ग्यारह होते हैं न ! दोनों ने मिलकर कड़ा परिश्रम किया और पन्द्रह दिन में नाव को समुद्र तक पहुंचाने में वे सफल हो गए. उनकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था.

यह नाव काफी बड़ी थी. इसमें दस-ग्यारह लोग बैठ सकते थे. नाव खेने में फ्राइडे का जवाब नहीं था. इतनी बड़ी नाव उसके चप्पू चलाने पर पानी में मछली की तरह तैरने लगती.

रॉबिन्सन ने फ्राइडे से पूछा, "इस नाव से समुद्र में यात्रा करने से खतरा तो नहीं होगा ?"

"नहीं, मालिक ! यह हर तरह से ठीक है." फ्राइडे ने रॉबिन्सन को आश्वस्त करते हुए कहा.

रॉबिन्सन ने पुराने जहाज के फटे पाल को

संभाल कर रखा हुआ था. उसने नाव पर मस्तूल लगाकर यह पाल बांध दी. इस काम में फिर कई दिन लग गए. अब वे नाव को चलाकर उसकी कभी-कभी परीक्षा भी करने लगे. पाल फाइडे के लिए नई चीज थी. उससे नाव कैसे चलती है, यह राबिन्सन ने उसे समझा दिया. फिर दिशासूचक यंत्र का उपयोग समुद्री यात्रा में कैसे किया जाता है, यह भी उसे समझाया.

राबिन्सन ने हिसाब लगाया. इस टापू में रहते उसे छब्बीस वर्ष हो गए थे. उसे लगता था कि अब वह इस टापू से निकल सकेगा. फिर भी उसने खेती और बकरियों की देख-रेख में कमी नहीं की. अंगूर सुखाने का काम चालू रखा.

वर्षा ऋतु प्रारम्भ होने वाली थी. वे नाव को नदी में ले आए थे पर वहां से उसके बह जाने का डर था. इसलिए नदी से एक छोटी-सी नहर काटी, जिसमें नाव सुरक्षित रूप से खड़ी रह सकती थी. नदी की बाढ़ का पानी नहर में घुसकर नाव को हानि न

पहुंचाएं. इसके लिए उन्होंने नदी और नहर के बीच बांध-सा बांध दिया. उनका विचार वर्षा ऋतु में जाने का नहीं था.

बरसात बीत चली तो नाव को फिर नदी में पहुंचाया और फिर से चलाकर उसकी परीक्षा की. नाव ठीक थी. अब यात्रा में आने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखकर पर्याप्त खाने-पीने का सामान उन्होंने जुटाना प्रारम्भ कर दिया. एक दिन फ्राइडे समुद्र-तट से एक कछुआ मारकर लाने को गया. वह अभी कुछ ही दूर गया था कि घबराया हुआ लौट आया. उसकी सांस फूल रही थी. वह हांफता हुआ बोला, "मालिक! बहुत बुरा हुआ. वे लोग उधर आ गए हैं. तीन नावें किनारे पर खड़ी हैं."

राबिन्सन ने उसे हिम्मत बंधाते हुए कहा, "डरो मत! हम उनको यहां से मार भगाएंगे. हमारे पास बन्दूकें हैं. बोलो, तुम उनसे लड़ोगे न?"

"हां-हां, क्यों नहीं, जरूर लड़ूंगा. किन्तु हम दो

हैं और वे बहुत-से हैं." फ्राइडे ने घबराते-घबराते कहा.

"फिर क्या हुआ ! हमारे पास बन्दूकें हैं. बन्दूक दागते ही वे भाग जाएंगे. जो सामने आएंगे, उन्हें हम मार डालेंगे. जब तुम्हें उनके चंगुल से छुड़ाया था तब भी तो बहुत-से थे."

बात फ्राइडे की समझ में आ गयी. घबराहट दूर हुई. उसने कहा, "हां मालिक, मैं लड़ूंगा और उन्हें मारूंगा."

राबिन्सन ने भरी हुई दो बन्दूकें फ्राइडे को थमा दीं. फिर चार बन्दूकें और पिस्तौल भी भरकर तैयार कर लीं. फिर फ्राइडे को कुल्हाड़ी देकर और स्वयं तलवार और दूरबीन लेकर टीले पर जा चढ़ा.

दूरबीन से देखने पर आदमियों की गिनती की तो इक्कीस निकले. तीन कैदी थे. उनकी नावें जहां खड़ी थीं वहां से नाला पास ही था. वह टीले से नीचे उतर आया. उसने एक बन्दूक और एक पिस्तौल भर-कर फ्राइडे को थमा दी. एक थैली में बारूद और

गोलियां भरकर, वह भी फाइडे के हाथ में थमा दी. फिर उसने फ्राइडे को समझाया कि जब तक मैं न कहूं, गोली न चलाए.

उन दोनों के पास काफी बोझ था. लुकते-छिपते वे चक्कर काटकर नर-भक्षियों के पास जा पहुंचे.

इन पर गोली चलाने और न चलाने के बारे में तरह-तरह की बातें राबिन्सन के मन में उठ रही थीं.

नर-भक्षी आग जला चुके थे और उन्होंने एक कैदी को मार डाला था और उसे खा रहे थे. दूसरा कैदी जो पास ही खड़ा था, गोरे रंग का था. अपनी जाति के गोरे कैदी को देखकर राबिन्सन का खून खौल उठा. एक झाड़ी की ओट में छिपकर उसने देखा तो वे दूसरे कैदी की रस्सियां खोल रहे थे. अब सोचने का समय नहीं था. राबिन्सन ने फाइडे को बताया कि तुम इधर बैठे लोगों पर निशाना लगाओ और मैं उधर वालों पर लगाता हूं. दोनों ने एक साथ बन्दूकें दाग दीं. राबिन्सन के निशाने से एक आदमी मारा गया और दो घायल हो गए किन्तु फाइडे ने तो

दो को मार गिराया और तीन को घायल कर डाला. फिर दोनों ने दूसरी भरी हुई बन्दूकों से गोलियां चलाईं. इससे दो जंगली और मर गए और कई घायल हो गए. बन्दूकों के धमाके से नर-भक्षी भयभीत हो गए थे और भागने लगे थे. तीसरी भरी हुई बन्दूक को उठाकर राबिन्सन झाड़ी से बाहर निकला और फ्राइडे को भी बाहर आने के लिए कहा.

राबिन्सन और फ्राइडे को अनोखी वेशभूषा में, बन्दूक हाथ में लिए अपनी ओर आते देखकर वे नर-भक्षी भी भाग गए जो गोरे कैदी को पकड़े हुए थे. वे भागकर नाव पर जा बैठे. तीन जंगली और भी उस नाव पर बैठे हुए थे. राबिन्सन के कहने से फ्राइडे ने इन लोगों पर गोली चला दी. इनमें से दो मर गए और एक घायल होकर गिर पड़ा. बाकी दोनों नाव लेकर भाग खड़े हुए.

राबिन्सन भागकर गोरे कैदी के पास पहुंचा और उसकी रस्सियां खोल डालीं. उसे पानी पिलाया और सहारा देकर बिठा दिया. राबिन्सन के पूछने

पर गोरे आदमी ने बताया कि मैं स्पेन का वासी हूं. उसका नाम सिनोर था. वह राबिन्सन का बार-बार धन्यवाद करने लगा. राबिन्सन ने उसे तलवार और पिस्तौल थमाते हुए कहा, "पहले इन नर-भक्षियों से निबट लें, तब बातें करेंगे. अगर तुम्हारे शरीर में दम है तो इनमें से एक-दो का सफाया कर डालो।"

सिनोर तलवार की मूठ पकड़कर झट नर-भक्षियों की ओर दौड़ पड़ा. उसने दो की गर्दनें काट डालीं और कुछ को घायल कर दिया. उधर राबिन्सन और फ्राइडे खाली बन्दूकों को दोबारा भरने लगे. एक भरी हुई बन्दूक लेकर फ्राइडे फिर नर-भक्षियों को मारने दौड़ा तो उसने देखा कि गोरे स्पेनी और एक जंगली में जमकर घूंसेबाजी हो रही थी. जंगली ने सिनोर को नीचे गिरा दिया और उसके हाथ से तलवार छीन ली. फिर ज्योंही वह सिनोर पर तलवार का वार करने को झपटा, सिनोर ने उसकी कनपटी पर पिस्तौल की गोली दाग दी, जिससे वह वहीं ढेर हो गया. फ्राइडे कभी बन्दूक

और कभी कुल्हाड़ी से नर-भक्षियों का सफाया करता आ रहा था.

बहुत-से नर-भक्षी मर चुके थे और कुछ गहरे घावों के कारण पड़े दम तोड़ रहे थे. पर एक बचकर समुद्र में जा घुसा था और तैरकर उस नौका पर सवार हो गया, जिस पर दो नर-भक्षी पहले ही सवार थे.

फ्राइडे ने राबिन्सन को सलाह दी कि नाव में भागते इन तीनों का हमें पीछा करना चाहिए और इन्हें समुद्र में डुबो देना चाहिए. अगर ये यहां से बच निकले तो अपने कबीले के बहुत से लोगों को लाकर हम पर आक्रमण कर देंगे. बात ठीक थी और राबिन्सन ने मान ली.

फ्राइडे और राबिन्सन नर-भक्षियों की तट पर खड़ी दूसरी नाव को लेकर उनका पीछा करने को तैयार हुए तो क्या देखते हैं कि नाव में एक और कैदी बंधा पड़ा है. उन्होंने उसके हाथ-पैर खोल दिये किन्तु वह फिर भी नहीं उठा. वह पड़ा-पड़ा

कराहता रहा. फ्राइडे ने उसे झट पहचान लिया. यह उसी के कबीले का था. दोनों में बातें होने लगीं. फ्राइडे इस आदमी को पहचानकर बड़ा प्रसन्न था. उसने अपनी नाक कैदी की नाक से मिलाई. यह एक तरह से हमारे यहां के गले मिलने जैसा था. फ्राइडे ने राबिन्सन को बताया कि यह मेरा पिता है.

फ्राइडे ने अपने पिता को पानी पिलाया तो उसको चैन पड़ी. स्पेनी सिनोर भी लड़ते-लड़ते थक चुका था और थोड़ा घायल भी हो गया था. फ्राइडे ने उसे भी नाव में बिठाया और नाव को नाले की ओर ले चला. राबिन्सन नाव के साथ-साथ पैदल चल रहा था. नाले से जहां गुफा पास पड़ती थी, वहां नाव रोक ली और दोनों कैदियों को नीचे उतारा. वे भूखे-प्यासे और कसकर बंधे रहने के कारण चलने में असमर्थ थे. फ्राइडे बारी-बारी उन्हें उठाकर गुफा तक ले गया. वे सीढ़ी पर चढ़कर बाड़ के भीतर नहीं ले जाए जा सकते थे, इसलिए बाहर ही रह गए. उनके लिए वहीं एक झोंपड़ी बना दी

गयी.

अगले दिन फ्राइडे ने नर-भक्षियों की सभी लाशों को रेत में दबा दिया और खाली बन्दूकों को उठाकर गुफा में रख गया.

राबिन्सन ने फ्राइडे से कहकर उसके पिता से पुछवाया कि जो तीन लोग नाव पर भाग निकले हैं, वे और जंगलियों को लाकर हम पर आक्रमण तो नहीं करेंगे ?

बूढ़े ने बताया कि इसकी संभावना नहीं है. वे धमाकों से बुरी तरह डर गए हैं. वे इस तरह के धमाकों को जादू मानते हैं और जादू से डरते हैं.

स्पेनवासी उस गोरे से राबिन्सन ने नर-भक्षियों द्वारा पकड़े जाने की कहानी पूछी तो उसने कहा, "कोई चार वर्ष पहले हमारा जहाज चट्टान से टकराकर टूट गया था. हम किसी तरह बच गए और किनारे जा लगे. इस किनारे पर फ्राइडे के कबीले के लोग रहते हैं. उन लोगों ने हमारे साथ बहुत अच्छा बर्ताव

किया. फिर हम दुःखी थे. हमारे कपड़े फट गए थे और घर लौट जाने की आशा भी समाप्त हो चुकी थी. नर-भक्षियों के कबीले प्रायः आपस में लड़ते रहते. इसी तरह की एक लड़ाई में वह पकड़ा गया था."

राबिन्सन ने स्पेनी गोरे को कहा, "अगर तुम सब लोग मुझे अपना कप्तान मान लो तो मैं देश पहुंचाने का उपाय कर सकता हूं पर सब को मेरे कहे अनुसार काम करना होगा."

स्पेनी ने कहा, "मैं अपने साथियों को पूरी तरह समझाऊंगा कि यदि देश लौटना चाहते हैं तो इस टापू पर आ जाएं और तुम्हें अपना कप्तान मानें."

फिर उन चारों—राबिन्सन, फ्राइडे, उसके पिता और स्पेनी ने मिलकर निश्चय किया कि अब छः मास बाद फ्राइडे का पिता और स्पेनी नर-भक्षियों की नाव पर बैठकर उस देश को जाएंगे, जहां से पकड़कर वे यहां लाए गए थे. वहां से दूसरे स्पेनवासी भी इस टापू पर आ जाएंगे.

छः महीने बाद बहुत-से लोग यहां इकट्ठे हो जाएंगे, इसलिए अधिक अन्न की आवश्यकता पड़ेगी, यह सोचकर उन चारों ने ज्यादा अनाज बोया और खूब अंगूर सुखाए.

समय आने पर नाव में पर्याप्त खाना-पानी रखकर फ्राइडे का पिता और स्पेनी वापस जाने के लिए तैयार हो गए. राबिन्सन ने उन दोनों को एक-एक बन्दूक और गोलियां भी दीं.

उन्हें इस टापू से गए हुए कोई आठ दिन हुए होंगे कि एक दिन सवेरे-सवेरे फ्राइडे दौड़ता और प्रसन्नता से चिल्लाता हुआ आया. उसने राबिन्सन को बताया कि वे लोग आ रहे हैं. उनकी नाव टापू से थोड़ी ही दूर है.

राबिन्सन ने बाहर जाकर देखा तो एक नाव टापू की ओर बढ़ी चली आ रही थी किन्तु अभी काफी दूर थी. किन्तु यह नाव पाल वाली थी और जिस दिशा से आ रही थी, वह दिशा भी वह नहीं थी, जिससे स्पेनवासी के साथियों को आना था.

राबिन्सन ने दूरबीन से देखा तो उसे पता चला कि तट से कुछ दूर कोई जहाज लंगर डाल रहा है. ऐसा लगता था कि यह जहाज इंग्लैंड वालों का है. जो नाव इस ओर आ रही थी, वह भी इस जहाज से ही आयी थी.

राबिन्सन की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि मामला क्या है. अंग्रेजों के जहाज इस ओर कभी नहीं आते थे. यह समुद्री मार्ग स्पेनवालों का था. दोनों एक-दूसरे के शत्रु थे. उसने सोचा कि यह जहाज कहीं समुद्री डाकुओं का न हो. इस डर से वह और फ्राइडे दोनों छिप गए. राबिन्सन छिपा-छिपा उधर देखता रहा.

नाव किनारे रुकी और यात्री टापू पर उतर पड़े. वे अंग्रेज ही थे. वे ग्यारह लोग थे और उनमें से तीन लोगों के हाथ पीठ-पीछे बंधे हुए थे. फ्राइडे ने समझा कि ये भी कोई नर-भक्षी हैं जो इन कैदियों को मारकर खाने के लिए यहां लाए हैं. किन्तु नाव से उतरते ही इन लोगों ने कैदियों के बंधन खोल

दिए और एक जगह बिठा दिया. स्वयं भी वृक्षों की छाया में बैठ गए.

उधर समुद्र के ज्वार में उतार प्रारंभ हो गया, जिसके कारण उनकी नाव रेत में धंस गई. नाव में दो मल्लाह थे किन्तु वे सोए पड़े थे. दूसरे लोग पेड़ों की छांह में सो गए. राबिन्सन की समझ में कुछ नहीं आ रहा था. अन्त में वह और फ्राइडे लुकते-छिपते तीनों कैदियों के पास पहुंचे. वे उनसे पूछताछ करना चाहते थे, पर वे राबिन्सन को देखकर डर गए. कैदी उन्हें देखते ही भागने लगे. राबिन्सन ने कहा, "डरो मत, मैं अंग्रेज हूं. तुम्हारी सहायता करने आया हूं. तुम कौन हो और यहां क्यों आए हो ?"

तब उन तीनों ने अपनी कहानी बताई. उनमें से एक उधर खड़े जहाज का कप्तान था, दूसरा जहाज के मजदूरों का सरदार और तीसरा एक यात्री था. जहाज के नाविकों ने कप्तान की आज्ञा मानने से इनकार कर दिया था और इन तीनों को इस टापू

घर सदा के लिए छोड़ जाना चाहते थे.

कप्तान रॉबिन्सन से सहायता करने की बात सुनकर ईश्वर को बार-बार धन्यवाद दे रहा था.

कप्तान ने बताया कि इन लोगों के पास दो बन्दूकें हैं. एक नाव में पड़ी है. कप्तान भला आदमी था. उसने रॉबिन्सन और फ्राइडे के पास बन्दूकें देख ली थीं. वह चाहता था कि बिना खून-खराबे के ही मामला सुलझ जाए. बात यह थी कि आठ नाविकों में से दो ही ज्यादा बिगड़ैल थे और उन्होंने डरा-धमकाकर अन्य नाविकों को अपने साथ कर लिया था. बस, उन दो को काबू करने की बात थी. रॉबिन्सन ने कप्तान से वचन ले लिया कि यदि वह इन दो बागियों को काबू में कर देगा तो कप्तान उसे इंग्लैंड तक अपने जहाज में ले चलेगा.

रॉबिन्सन ने तीनों कैदियों को एक-एक बन्दूक दी और सोए हुए नाविकों की ओर बढ़ने को कहा. एक नाविक ने उन्हें आते देखा तो शोर मचाकर सब को जगा दिया किन्तु तब तक उनका एक नेता मर

चुका था. दूसरा नेता भी घायल हो चुका था और भागना चाह रहा था. कप्तान ने उसे बन्दूक के कुन्दे की चोट मारकर धरती पर गिरा दिया. बाकी विद्रोहियों ने जब अपने को घिरा हुआ देखा तो कप्तान के पैरों में गिरकर क्षमा मांगने लगे. अब जहाज़ पर अधिकार जमाने का प्रश्न था. जहाज़ में कप्तान की बात मानने वाले काफी लोग थे पर विद्रोहियों ने उन्हें डरा-धमकाकर अपने साथ मिला लिया था. इंग्लैंड में कप्तान से विद्रोह करना बड़ा भारी अपराध माना जाता था. और विद्रोहियों को मृत्युदण्ड मिलता था इसलिए जो एक बार विद्रोही बन जाते थे, वे कम ही काबू आते थे.

राबिन्सन ने सलाह करके सबसे पहले नाव में लगे पाल में एक बड़ा-सा छेद कर दिया और नाव को बेकार कर डाला. उधर जहाज़ पर से दो बार बन्दूक छूटने की आवाज़ आयी, जो नाव वापस लौटाने के लिए संकेत था. फिर भी जब नाव नहीं लौटी तो जहाज़ से एक नाव लेकर दस लोग इधर आए.

इनके पास बन्दूकें थीं. राबिन्सन ने इन्हें भी काबू करने की योजना बनाई. पहले पकड़े लोगों में से जो ज्यादा शरारती थे, राबिन्सन उन्हें एक गुफा में और दूसरों को दूसरी गुफा में ले गया. नए आदमियों को आते देखकर कप्तान घबरा गया पर राबिन्सन ने हिम्मत नहीं हारी. पहले वाले आदमियों में से दो ने कप्तान का साथ देने का वायदा किया. कप्तान ने उन्हें क्षमा कर दिया.

दूसरी नाव वाले किनारे पहुंचते ही यह देखकर दंग रह गए कि पहली नाव टूटी पड़ी है और साथी भी नहीं हैं. उन्होंने बन्दूक छोड़कर संकेत किया पर उत्तर नहीं मिला. वे वापस जाने लगे किन्तु लौट आए और साथियों को खोजने लगे. तीन जने नाव में बैठे रहे और सात उतरकर बन्दूकें दागने लगे ताकि उत्तर में उनके साथी भी बन्दूक दागकर अपने होने की सूचना दें ताकि उनकी सहायता की जा सके.

राबिन्सन ने फ्राइडे और मजदूरों के सरदार

को समझा-बुझाकर भेजा कि वे अपनी आवाज से इन लोगों को भ्रम में डालकर दूर, उधर ले जाएं. फ्राइडे की आवाज से ये समझते थे कि उनका कोई साथी सहायता के लिए पुकार रहा है.

मार्ग में नाला आने पर ये इधर से नाव को ले आए और नाला पार करके उस पर दो आदमी छोड़ दिए. फ्राइडे उन्हें भ्रम में डालकर घने जंगल में ले गया. जो दो लोग नाव में रह गए थे, उन्होंने नाव को बांध दिया और लेट गए. कप्तान ने एक के सिर पर जोर से चोट मारी तो वह बेहोश हो गया. दूसरे ने कप्तान से क्षमा मांग ली और उसका साथी बन गया. बेहोश को उन्होंने दूर झाड़ियों में छिपा दिया. उधर फ्राइडे तो वापस राबिन्सन के पास लौट आया और ये आठों विद्रोही जंगल में भटकते रहे और सांझ होने पर नाव पर लौट आए. वहां उनके दोनों साथी गायब थे.

अब तो उन्हें बड़ी घबराहट हुई. उधर राबिन्सन ने छिपकर चेतावनी दी, "अपनी-अपनी बन्दूकें रख

दो. तुम लोग हमारे कैदी हो. हम पचास आदमी हैं. हमारे पास बन्दूकें हैं. यदि किसी ने भागने का प्रयत्न किया तो उसे गोली मार दी जाएगी."

यह सुनकर उनके रहे-सहे होश भी गुम हो गए. उनका नेता भागने का प्रयत्न करने लगा तो कप्तान ने उसे गोली मार दी. बस, फिर क्या था. बाकी लोगों ने उसी समय हथियार डाल दिए. कप्तान ने उनमें से एक को अपने साथ ले लिया और दूसरों को हाथ-पैर बांधकर डाल दिया.

राबिन्सन और फ्राइडे तो कैदियों पर नज़र रखने के लिए वहीं रह गए और कप्तान अपने साथियों को लेकर बाद में आधी नाव में बैठकर जहाज पर चला गया. वह रात को जहाज के पास पहुंचा. उसके एक आदमी ने आवाज देकर जहाज वालों को बताया कि हम उन लोगों को ले आए हैं. मल्लाहों ने उन्हें अंधेरे में जहाज में चढ़ा लिया. जहाज में पहुंचते ही कप्तान के साथियों ने बन्दूकें दागकर विद्रोहियों को डरा दिया. उनको समझ में

कुछ नहीं आ रहा था. दो-चार लोगों ने सामना करने का प्रयत्न किया तो उन्हें गोली से उड़ा दिया गया. कप्तान का जहाज पर दोबारा अधिकार हो गया. उसने पूर्व-निश्चित संकेत के अनुसार सात गो छोड़कर राबिन्सन को अपनी सफलता की सूचना

दूसरे दिन कप्तान नाव लेकर आया व राबिन्सन तथा फ्राइडे को जहाज पर ले गया

बाद में उस स्पेनवासी और ... ... के आने पर वे भी उस टापू से चले ...

सोने की ईंटें और मोहरें ज... ... डू जहाज में से उठाई थीं, उन्हें ले लिया.

लम्बी यात्रा के बाद एक दिन जहाज इंग्लैंड के तट पर आ पहुंचा. इतने वर्ष बाद अपने देश की धरती को देखकर राबिन्सन की आंखों में प्रेम के आंसू उमड़ पड़े. उसने मातृभूमि को प्रणाम किया और उसकी मिट्टी को माथे से लगा लिया. वह अट्ठाईस वर्ष उस टापू में रहा और पैंतीस वर्ष बा स्वदेश लौटा.